

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 14 अक्टूबर -II-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

रक्षाबंधन के अवसर पर 'वर्तमान परिवेश में नैतिक मूल्यों की रक्षा' विषय पर ऑनलाइन वेबिनार लोकसभा अध्यक्ष एवं छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री हुए शामिल



नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने में ब्रह्माकुमारीज का प्रयास सराहनीय : लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, नई दिल्ली

देश के विकास के लिए जाति, धर्म और समाज से ऊपर उठकर नैतिक मूल्यों को अपनाकर आगे बढ़ने में सभी की भागीदारी जरूरी है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज का प्रयास सराहनीय है। यह संस्था न सिर्फ ग्रामीण बल्कि आदिवासी और जनजातीय क्षेत्रों में भी अच्छा काम कर रही है। युवा देश की बहुमूल्य सम्पत्ति हैं, इनकी ऊर्जा को सही दिशा देने की जरूरत है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा दे, उन्हें देश के विकास में साझेदार बनाना बहुत बड़ी चुनौती है।

नैतिक मूल्यों की अवहेलना से पैदा हुई अनेक समस्याएं : माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, छत्तीसगढ़

समाज में जितनी भी समस्याएं हैं, सब किसी न किसी नैतिक मूल्य की अवहेलना के कारण ही पैदा हुई हैं। आज ऐसे समाज का निर्माण करने की जरूरत है जिसमें हर व्यक्ति नैतिक मूल्यों को धारण किए हो। आज ब्रह्माकुमारीज जैसे मूल्यों की शिक्षा देने वाली संस्थाओं की आवश्यकता है। रक्षाबंधन, मन वचन कर्म से पवित्रता को अपनाने का संदेश देता है। अपनी बहन की रक्षा के साथ हमें दूसरों की बहन की रक्षा को भी अपना दायित्व समझना होगा।



रायपुर-छ.ग.। रक्षाबंधन के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'वर्तमान परिवेश में नैतिक मूल्यों की रक्षा' विषय पर आयोजित ऑनलाइन वेबिनार में ब्रह्माकुमारीज की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयन्ती दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन से हमारे अंदर नैतिक मूल्यों की धारणा करने की शक्ति आती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि मनोविकार हमें तो दुःखी करते ही हैं साथ ही दूसरों को भी कष्ट पहुंचाते हैं। इन विकारों से बचने के लिए स्वयं को आत्मा समझें और परमात्मा की संतान समझें तो हमारे कर्मों में श्रेष्ठता आ जाएगी। ओ.आर.सी. गुरुग्राम की

निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि रक्षाबंधन का अभिप्राय शारीरिक रक्षा नहीं है। यह त्योहार सिर्फ भाई-बहन तक सीमित नहीं है। इसके पीछे छिपे गहरे अर्थ को समझने की जरूरत



है। अहमदाबाद से युवा प्रभाग की उपाध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने कहा कि वर्तमान समय समाज में भौतिकता, प्रतिस्पर्धा और अनैतिकता का माहौल है। ऐसे समय पर केवल



नैतिक मूल्यों द्वारा ही हमारी रक्षा हो सकती है। शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर, रायपुर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि संसार को सुखमय बनाने के लिए नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य जरूरी हैं। इस समय परमपिता परमात्मा हमें गीता ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पाँच विकारों से हमारी रक्षा करते हैं। साथ ही दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। मौके पर स्थानीय गायक स्वप्निल कुशतर्पण व कु. शारदा नाथ द्वारा राखी पर स्वरचित गीत एवं बाल कलाकारों द्वारा मनोरंजक सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. रूचिका बहन ने किया।

परमशिक्षक परमात्मा शिव उच्च ज्ञान दे कर रहे हमारा चरित्र निर्माण



पटना-खाजपुरा(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज नन्दनपुरी, खाजपुरा सेवाकेन्द्र द्वारा शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान पटना की अध्यक्षा डॉ. वीना सिंह, बर्न एंड प्लास्टिक सर्जरी, आर्यभट्ट भौगोलिक अध्ययन केन्द्र की निदेशिका डॉ. पूर्णिमा शेखर सिंह, पूर्व एम.एल.सी. एवं प्रिन्सीपल, वाणिज्य महाविद्यालय तथा निदेशिका, यू.जी.सी. ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट सेंटर पटना युनिवर्सिटी, चाणक्य लॉ विश्वविद्यालय पटना बिहार के अध्यक्ष प्रोफेसर एस.सी. राय, पटना विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अखंडानंद त्रिपाठी, जय प्रकाश नारायण विश्वविद्यालय छपरा के अध्यक्ष प्रोफेसर ब्र.कु. शंकर शाह तथा अन्य शिक्षकों को राजयोगिनी ब्र.कु. अंजू दीदी तथा ब्र.कु. रविन्द्र भाई ने संस्था की ओर से सम्मानित किया। राजयोगिनी ब्र.कु. अंजू दीदी ने बताया कि परमात्मा ही हमारा परमशिक्षक है। परमात्मा हमें उच्च ज्ञान इस समय दे रहे हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में सुख, शांति, सद्भावना तथा सुसंस्कार दिखाई नहीं देते। परमात्मा शिव जो कि हमारे परमशिक्षक हैं वे हमें ये दिव्य संस्कार तब देते हैं जब विश्व में दुःख, अशांति, ईर्ष्या तथा बुराई बढ़ती है। परमपिता परमशिक्षक परमात्मा शिव इस धरा धाम पर आ चुके हैं और हमारे चरित्र निर्माण के कार्य कर रहे हैं।

देश में अमन चैन के लिए प्रेम सौहार्द को मिले बढ़ावा

गेट टूगेदर • ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन में एम.एस. बिट्टा ने कहा कि आतंकवाद से भी खतरनाक है पॉलिटिकल टेररिज़्म

शांतिवन। अखिल भारतीय आतंकवाद विरोधी मोर्चा के अध्यक्ष मनिन्दर जीत सिंह बिट्टा के एक दिवसीय सिरौही जिले के दौरे के अंतर्गत ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन में आयोजित गेट टूगेदर कार्यक्रम में बिट्टा ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में अमन चैन के लिए प्रेम, सौहार्द को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को पहल करने की जरूरत है। आतंकवाद से हजारों-लाखों लोगों की जान चली जाती है, लेकिन पूरे विश्व में आतंकवाद से भी खतरनाक पॉलिटिकल टेररिज़्म

है। उन्होंने कहा कि आज अफगानिस्तान में माताओं, बहनों और बच्चों की जिन्दगी खतरे में है। वहाँ प्रतिदिन खून की नदियां बह रही हैं और यह मानवता का नहीं बल्कि दानवता का एक जीता-जागता उदाहरण है। इससे उबरने के लिए सबको मिलकर प्रयास करने की जरूरत है।

ब्रह्माकुमारी संस्थान के शांतिवन में आने पर मनिन्दर जीत सिंह बिट्टा का भव्य स्वागत किया गया। बिट्टा ने ब्रह्माकुमारी संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की स्मृति में बने प्रकाश स्तम्भ और दादी जानकी की स्मृति में बने शक्ति स्तम्भ पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद दादी जानकी व दादी हृदयमोहिनी के कमरे में कुछ समय मौन रहकर ध्यान-साधना की।

कश्मीरी अब सही राह की ओर

मनिन्दर जीत सिंह बिट्टा ने कहा कि यदि कश्मीर से धारा 370 केन्द्र सरकार नहीं हटाती तो कश्मीर में भी हालात और खराब हो सकते थे। वहाँ आतंकवाद का और अधिक विस्तार हो जाता, लेकिन समय रहते इसको हटाने से कश्मीर के युवाओं में अब शिक्षा में, देश के विकास में रूचि बढ़ेगी। इस अवसर पर माउण्ट आबू के एसडीएम अभिषेक सुराणा, अहमदाबाद महादेवनगर सबजोन संचालिका ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, माउण्ट आबू के डीएसपी प्रवीण कुमार, माउंट आबू के थानाधिकारी देवेन्द्र सिंह, आबू रोड के थानाधिकारी बलभद्र सिंह, शहर के थानाधिकारी सरोज बैरवा समेत कई लोग उपस्थित रहे।



ज्ञान और अज्ञान से तय होता सुख और दुःख

आज व्यक्ति को परमात्म ज्ञान मिल जाये तो उसका जीवन वरदान से कम नहीं होगा। ईश्वरीय ज्ञान उसके जीवन में खुशहाली ला देगा। ज्ञानी भल रहेगा तो इसी संसार में, परंतु उसके चेहरे से खुशी झलकती रहेगी। इस संसार की हालातें उसकी खुशी छीन नहीं सकतीं। क्योंकि उसे पता है कि जीवन एक खेल है, उसे खेल की तरह ही जीना है। खेल में कभी हार, कभी जीत। ये सिक्के के दो पहलू हैं, ये उसे निरंतर स्मृति में रहता है। जिसके कारण उसका स्मित सदा बना रहता है। उसकी मन-बुद्धि श्रेष्ठ ज्ञान से श्रृंगारित रहती है, जिससे वो भली-भांति जब चाहे, जैसे चाहे उसका प्रयोग व उपयोग कर अपने को खुश रख सकता है। परमात्म ज्ञान जैसे कि एक वरदान की तरह उसके जीवन का अंग बन जाता है। क्योंकि उसको निश्चय रहता है कि परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान से उसका कभी भी अकल्याण नहीं हो सकता।

ज्ञानी और अज्ञानी में फर्क है कि 'ज्ञानी मरते हुए भी हँसता है और अज्ञानी जीते हुए भी मरता है।' ज्ञान हँसना नहीं सिखाता, बस रोने का कारण मिटा देता है। ऐसे ही अज्ञान रोने नहीं देता,

बस हँसने के कारणों को समाप्त कर देता है। ज्ञानी इसलिए हर हाल में खुश रहता है क्योंकि वो जानता है, जो मुझे मिला है, वह कभी मेरा था ही नहीं। और जो कुछ मुझसे छूट रहा है, वह भी मेरा नहीं। परिवर्तन ही संसार का नियम है। अज्ञानी इसलिए रोता है क्योंकि उसकी मान्यता है कि जो कुछ उसे मिला है, उसी का था और उसी के दम पर ही मिला है। जो कुछ छूट रहा है, उस पर अपना अधिकार मान कर बैठा है। यही अशांत होने का मुख्य कारण है। मूढ़ता में नहीं, ज्ञान में जीना अच्छा है, ताकि आप हर परिस्थिति में खुश रह सकें।

वास्तव में अज्ञानी व्यक्ति सांसारिक ज्ञान का सहारा लेकर विनाशी प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है, फिर चाहे वह धन और वस्तुओं का संग्रह हो अथवा पद-पोजीशन की उपलब्धियां हों या सम्बंधों का विस्तार हो या तेरे-मेरे की भावनाएं हों। वह भूल जाता है कि यह सब कुछ ज़्यादा समय तक नहीं रहने वाला। इन सबको भोगने वाला शरीर भी वह एक निश्चित अवधि के बाद छोड़ देगा।

वह बेचारा तो इतनी मोहपाश की जंजीरों में बंधा हुआ धीरे-धीरे उस अंधेरी सुरंग में भटकता रहता है जहाँ ना तो कुछ दिखाई देता है और न ही कुछ सूझता है। जब वह स्वयं को बहुत थका हुआ और ठगा हुआ महसूस करता है, तब उसे भगवान की याद आती है। परंतु तब तक समय हाथ से निकल चुका होता है। अब तो उसकी स्वयं की कर्मेन्द्रियां भी प्रभु को याद करने के लिए साथ नहीं देतीं और मन चंचल घोड़ों की तरह व्यवहार करता है।

अब हमारी समझदारी इसी में है कि समय रहते हम अपने सत्य स्वरूप को पहचान लें और अपने लक्ष्य के प्रति सजग हो जायें। साथ ही साथ परमात्मा के साथ अपने अटूट सम्बंध को भी स्थापित कर लें। क्योंकि परमात्मा वो खिवैया है जो इस मुश्किलों भरे संसार से पार ले जाने में हमारी मदद करता है। परमात्मा ज्ञान और प्रेम का सागर है, सर्वशक्तिवान है, वो ही निष्काम प्रेम और निःस्वार्थ मदद करता है।

अतः उन पर अटूट निश्चय रख, अटूट नाता बनाकर उनसे घनिष्ठ सम्बंध स्थापित कर लेने में ही हमारी भलाई है, हमारा कल्याण है। बस हमारी तरफ से कोई कमी न रह जाये जो दाता दे रहा है उसका फायदा हम उठा न सकें। उनका प्रेम, उनका दिल हमें जीत लेना है, वो तो देने के लिए ही आया है। हम पर निर्भर है कि हम कितना उससे लेने में समर्थ हैं।

हमें बस इस मायावी चक्रव्युह से अपने आप को बचा के रखना है। कभी भी, किसी भी बात में, किसी भी परिस्थिति में स्वयं को उलझा नहीं लेना है। क्योंकि इन उलझनों के दलदल में एक बार फिसले तो फिर उससे निकल पाना लगभग नामुमकिन होगा। इस समय परमात्मा का ज्ञान हमें खुद को श्रेष्ठ बनाने के लिए है। उसे गंवाना नहीं है। भगवान तो हर सम्बंध निभाने को तैयार है, एक बार उससे सम्बंध बना कर तो देखो। उसका साथ है, तो ऐसा है, 'जो एक आम आदमी को भी खास बना देगा'।

इस समय प्रभु वरदान की बेला है, इसमें समझ-बूझ कर अपने को संवारना है। यही ज्ञानी की समझदारी है। अज्ञानी और ज्ञानी रहेंगे तो इसी संसार में, पर एक के चेहरे पर दुःख की लकीरें होंगी और दूसरे के चेहरे पर खुशियों की लहरें। ज्ञानी संसार में रहते भी संसार उसमें नहीं रहेगा, परिणामस्वरूप उससे प्रतिबिम्बित होने वाले सुख व दुःख उसे छू भी नहीं पायेंगे, और वो उन सब से परे परमानंद की स्थिति में रहेगा।

अथॉरिटी और अधिकारी... ये दो शब्द याद रखो



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कोई भी संकल्प उठना माना अपने में संशय आना, संशयबुद्धि विनश्यन्ती। अपने आप में ही संशय उठता है, पता नहीं होना तो चाहिए, होना तो है ही... होगा या नहीं माना संशय। अपने में पूरा निश्चय नहीं है। अपने में निश्चय है तो विजय है। एक होना ही है, दूसरा हाँ देखेंगे, कर तो रहे हैं, पता नहीं...तो कौन सा अच्छा लगता है? होना ही है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाबा है ना। बाबा की अथॉरिटी में बहुत नशा होना चाहिए। तो सीट पर सेट हो जाओ। मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, यह है निश्चय की सीट पर सेट होना। बिना सीट के कोई नहीं, इसलिए अथॉरिटी और अधिकारी, यह दो शब्द याद रखो। अपनी अथॉरिटी याद ही नहीं है तो अपना अधिकार किस पर रहेगा! बाबा कहते बच्चे आपकी वाणी निर्मल हो, भावना निमित्त भाव की हो, निर्माण बनके सेवा करो। अगर निर्माण है तो मान मिलेगा। स्वमान में रहो तो मान मिलेगा। मांगने से मान नहीं मिलता। अगर संकल्प भी रखेंगे कि मुझे तो कोई पूछता ही नहीं है, मैं इतना कुछ करती हूँ, देखते ही नहीं हैं मैं क्या कर रही हूँ, कैसे कर रही हूँ... जैसे मैं हूँ या नहीं हूँ, किसी को पता ही नहीं पड़ता है। सेवा करके आते हैं तो भी नहीं पूछते हैं। लेकिन वो नहीं पूछती कोई बात नहीं, पर

अगर निर्माण है तो मान मिलेगा। स्वमान में रहो तो मान मिलेगा। मांगने से मान नहीं मिलता।

बाबा की सेवा करने से खुशी रूपी अमृत तो पी लिया ना, अगर सच्ची सेवा की तो। अभिमान वाली की, फिर तो नहीं मिलेगा। लेकिन जब सच्चे दिल से हम सेवा करते हैं तो बाबा के प्यार का प्याला मिलता है, खुशी का प्याला कितना पीते हैं। तो बाबा ने आपको पूछ लिया, बाकी कोई ने नहीं पूछा तो क्या बात है! आखिर भी फैसला कौन करेगा? किसको क्या पद देना है, बाबा ही फैसला करेगा ना! तो हमारे को बाबा पूछने वाला है। रात्रि को सोओ तो जैसे बाबा मालिश कर रहा है, माथे में बहुत ताकत दे रहा है, ऐसे अनुभव करते सो जाओ। बाबा तो रोज आपकी पालना करते हैं। बस, बाबा की गोद में सो जाओ। लेकिन बाबा की कोई स्थूल में तो गोदी है नहीं। गोदी माना बाबा की याद, बाबा की श्रीमता। बाबा की याद में सोयेंगे तो जैसे एकदम बाबा की गोदी में सो गये, ऐसा अनुभव होगा। बाबा मिला, भाग्य मिला... यह फीलिंग भले करो। बाकी छोटी-छोटी बातों की फीलिंग नहीं करो। क्योंकि फीलिंग करना माना दुःख लेना दुःख देना।

केवल समर्थ संकल्प ही करना है हमें... व्यर्थ कुछ न हो

संकल्प

राजयोगिनी दादी जानकी जी



कोई भी कारण से व्यर्थ संकल्प न आये, इसके लिए अपने संकल्प की क्वालिटी फर्स्टक्लास हो। परमधाम निवासी बाबा को जिस प्रकार संकल्प आया, जिस संकल्प से बाबा ने हम बच्चों को पैदा किया है। बाबा बच्चों को टच करता है, खींचता है, प्रैक्टिकल करने की शक्ति भी देता है। अपनी स्व उन्नति के लिए या सेवा के लिए कोई काम का संकल्प है तो करो, इस संकल्प में क्या फायदा है, वो देखो। हमारे को कैसा संकल्प करना चाहिए, बाबा वो सिखाता समझाता है। संकल्प में भी चार बातें हैं - एक है स्वयं की कोई कमजोरी, दूसरी है कमी, तीसरी है आदत और चौथी है उसी अनुसार घड़ी-घड़ी किसी बात का चिंतन। जैसे कोई को बीड़ी सिगरेट की आदत है, तो उसी का चिंतन चलता है। ऐसे बिना काम के संकल्प करने की आदत नहीं छूटती है। जो किया है या करना है, वो भी फालतू संकल्प चलता रहता है। अभी कुछ करना है, इसके बाद करना है, कर लेंगे - लेकिन अभी उसका संकल्प क्यों आये! बार-बार वही ख्याल क्यों आये? तो अन्दर डीप साइलेंस में जाना माना अन्तर्मुखी होना। यह अन्तर्मुखता भी क्या है, उसकी गहराई में जायें। बाहरमुखता तो नैचुरल है, भले अच्छे तरीके से कहेंगे परन्तु वो है बाहरमुखता। अन्तर्मुखता माना मन-बुद्धि से बाबा के कनेक्शन में रह अपनी अलौकिक स्थिति में मस्त रहना। कभी किसी के प्रति अगर अन्दर में द्वेष भाव है तो अन्तर्मुखता नहीं है। जैसे बाबा हमारे अन्दर को जान करके हमारे अन्दर में परिवर्तन लाना चाहता है। यही तो परमात्मा की कमाल है।

मुक्ति वर्ष में संस्कारों से मुक्त हो सम्पन्न बनने का चार्ट बनाओ

वैरागी-त्यागी

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी



हमारी मैनेजमेंट पहले चलती है संकल्पों से, हमारे शुभ संकल्प सदा रहें इसकी कन्ट्रोलिंग सीखो ताकि सूक्ष्म व्यर्थ समाप्त हो जायें और उसी ही अलौकिकता से हमारी आपस में दृष्टि और वृत्ति रहे जिससे शुभ भावनाओं की सकाश मिलती रहे। ऐसी शुभ सकाश एक दो में दो भी, लो भी। तो इस मुक्ति वर्ष में संस्कारों से मुक्त हो, सम्पन्न बनने का चार्ट बनाओ। और वह सम्पन्न स्थिति की रिजल्ट का चार्ट हर एक बाबा को दो। योग का बल सेवाओं को सफल करने में मदद करता है। तो चारों तरफ योगबल के साइलेन्स की शक्ति

के वायब्रेशन फैलाओ जो हैं परन्तु आत्मा एक है। बाबा हैं परन्तु आत्मा एक है। बाबा अनेकों के अनेक उल्टे-सुल्टे का यह शब्द पक्का हो कि एवररेडी बनना है। हमारे कारण कभी बाबा की बदनामी न हो। शहरों में जो उल्टे वायब्रेशन हैं, जबकि हम सबको इतना ऊंचा वह सब इस सूक्ष्म योगबल से समाप्त हो जाएं। योगबल से ही हमारी विजय है। जैसे दिनोंदिन हम देखते हैं कि सर्विस में कितनी सहज सफलता है, प्रगति है या कितनी वृद्धि हो रही है, यह आप सब भी अनुभव करते हैं। समय प्रमाण अभी हम सब आपस में इतना मिलकर स्नेह से रहें जो सभी कहें कि दो शरीर



कही हैं : 1. बेहद के वैरागी बनो। 2. बेहद के त्यागी बनो। तो बाबा की आज्ञाओं को प्रैक्टिकल रूप देना है। एवररेडी बनना है, बेहद के वैरागी बनना

योग का बल सेवाओं को सफल करने में मदद करता है। तो चारों तरफ योगबल के साइलेन्स की शक्ति के वायब्रेशन फैलाओ जो अनेकों के अनेक उल्टे-सुल्टे

फालतू के विघ्न होते, समाज के, पब्लिक के, गांव के या शहरों में जो उल्टे वायब्रेशन हैं, वह सब इस सूक्ष्म योगबल से समाप्त हो जाएं। योगबल से ही हमारी विजय है।

है, बेहद के त्यागी बनना है और सन्तुष्टता की खान बनकर रहना है। संगठन में रहते मतभेद न हो, इसके लिए पहले एक दो के विचारों को सम्मान देकर सुनना चाहिए। तो दिल में चाहिए सम्मान। सम्मान देकर निर्णय करेंगे तो उस निर्णय को दोनों मानेंगे। फिर भी वन टू होता है तो यह नॉलेज हमें सिखाती है - बड़ों की रिस्पेक्ट करो, छोटे बड़े भी होंगे तो छोटे को प्यार से कहेंगे, बड़े को सम्मान से कहेंगे, तो भी मान लेंगे। अगर दोनों को सम्मान से बोलेंगे तो भी वह मान जायेंगे।

उन्नति » निरंतर आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ छोड़ना होगा कुछ अपनाना होगा, तब ही आप लक्ष्य तक पहुंचेंगे

1.) एक है छोड़ देना और 2.) दूसरा है धारण करना। ये दोनों शक्तियाँ हर व्यक्ति में हैं। शराब छोड़ना, सिगरेट छोड़ना, मांस आदि खाना छोड़ना इत्यादि छोड़ना सब लोग जानते हैं। कई बार अच्छी चीज भी किसी को अच्छी नहीं लगती तो वो उसको भी छोड़ देता है। किसी के कहने पर भी वह

अपना रहे हैं और जिसको अपनाना चाहिए उसको छोड़ रहे हैं। शक्तियों का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। बाबा ने कहा है कि दैवीगुणों को धारण करना है, इनको छोड़ना नहीं है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, अलबेलापन, ईर्ष्या और द्वेष को त्यागना है, इनको धारण नहीं

इनका सदुपयोग अवश्य करना चाहिए।

3.) लाज करने की अथवा लज्जा करने की शक्ति अर्थात् संकोच करने की शक्ति। बुराई करने के लिए हमें लज्जा आनी चाहिए। कोई व्यक्ति भेदे तरीके से हँस रहा है, बात कर रहा है अथवा हाव-भाव प्रकट कर रहा है तो ऐसे व्यक्ति को देख लोग कहते

करता है, सीट के लिए झगड़ता है तो क्या मैं भी वैसे कर सकता हूँ? वो तो ब्रह्माकुमार है नहीं। मैं बड़े-ते-बड़े बाप शिव बाबा और ब्रह्मा बाप की सन्तान हूँ, ईश्वरीय कुल का हूँ और देवता धर्म का हूँ। मैं एक आध्यात्मिक संस्था का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। अगर मैं गलत व्यवहार करूँ तो लोग क्या कहेंगे! तो इस समय हमें लज्जा करने की शक्ति को यूज करना चाहिए। मुझे तो अपने बाह्यण कुल-मर्यादा और ईश्वरीय लोक-लाज में रहना चाहिए। इसीलिए बाबा कई बार कहा करते थे, इस बूढ़े बाप की दाढ़ी की लाज तो रखो। कोई भी बच्चा गलत काम करता है तो समाज में क्या कहते हैं? इसका बाप कौन है? इसको कोई तमीज नहीं सिखायी है क्या? इस प्रकार, बच्चों के गलत व्यवहार के साथ माँ-बाप की भी इज्जत चली जाती है। इसलिए गलत काम, बुरा काम करते समय हमें लज्जा आनी चाहिए अर्थात् हमें लज्जा करने की शक्ति को यूज करना चाहिए।

4.) प्रयोग करने की शक्ति। कई बार हम दूसरों को भी कहते हैं कि यह करके तो देखो, इसको आप प्रयोग में लाकर तो देखो। कोई भी कर्म हम करते हैं तो पहले देखते हैं कि यह कर्म करके किसी ने सफलता पायी है, तो हम भी उसको करना चाहते हैं। अगर किसी ने किया भी न हो, तो उसका प्रयोग करके हम देखते हैं कि इसमें क्या बुराई है, क्या भलाई है। पहले हम उसको छोटे स्तर पर प्रयोग करते हैं। मनुष्य का सहज स्वभाव है प्रयोग करने का। अगर प्रयोग में सफलता मिली तो उसको खुशी होती है, उसको बल मिलता है, उसकी अन्य शक्तियों का विकास भी होता है और चार लोगों को बताता है, समझाता है और उनको भी प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन देता है।



ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आप योग में बैठते हैं तो आप कहते हैं कि आज हमें बहुत आनन्द आया, बाबा ने हमारी झोली भर दी, आत्मा तुस हो गयी। बाबा कहते हैं, बच्चे, जो किया उसका प्रयोग करो। समझो, आपने क्लास हॉल में बर्फ लाकर रखी है, उसके ऊपर कुछ ढक दिया है ताकि वो किसी को दिखायी न पड़े। उसके पास कोई बैठेगा तो उसको लगेगा कि इस तरफ से मुझे ठंडक आ रही है, दूसरी तरफ तो है नहीं। पता नहीं, इधर क्या है! इसका अर्थ है, जो भी वस्तु है वह अपने अस्तित्व को दिखाती है। अपना प्रभाव तो डालेगी ना। अगर कमरे में अगरबत्ती जलायी है तो वो अपनी ख़राबू तो फैलायेगी ना। उसी प्रकार, अगर आपको योग में शान्ति मिली, आनन्द मिला, शक्तियों का ख़ज़ाना मिला तो उसका प्रभाव और अस्तित्व दूसरों को पता तो होना चाहिए ना! आप अपनी योग की स्थिति को ऐसी बनाओ जैसे आपसे रेडियेशन अथवा विकीर्ण प्रवाहित हो रहा है। जैसे रेडियो का अनुभव हो रहा है। लोग पूछें कि बात क्या है? हमें भी उसका राज बता दो, हमें भी वह कला सिखा दो। इसलिए बाबा कहते हैं, बच्चे, इस ज्ञान का, योग का प्रयोग करो। तब मेरे और आपके भक्त आपको ढूँढ़ते आयेंगे कि हमें भी रास्ता बताओ।

स्व-उन्नति के लिए कुछ छोड़ें,



उस अच्छी चीज को स्वीकारता नहीं। क्योंकि वह चीज उसको ख़राब लग रही है। इसी प्रकार, हमको ख़राब चीजों को, ईश्वरीय जीवन में बाधा डालने वाली चीजों को छोड़ना है, त्यागना है और अच्छी चीजों अर्थात् सद्गुणों और शक्तियों को धारण करना है। लेकिन आज लोग जिसको छोड़ना चाहिए उसको

करना है। जैसे हमें अटैचमेंट को छोड़ना है और डिटैचमेंट को धारण करना है। वस्तु, व्यक्ति और वैभवों का मोह त्यागना है और शरीर से भिन्न होने का, विदेही बनने का अभ्यास धारण करना है। शरीर की मोह-ममता अर्थात् देह-अभिमान को छोड़ना है और आत्म-अभिमान को धारण करना है। ये सब मौलिक शक्तियाँ हैं, हमें

हैं, अरे तुम अपने कुल की लाज तो रखो। इसी तरह बाबा कहते हैं, बच्चे, अपनी लौकिक कुल-मर्यादायें और लोक-लाज को त्यागो और ईश्वरीय कुल-मर्यादायें और दैवी-लाज करो और रखो। उदाहरण के तौर पर मैं ब्रह्माकुमार हूँ, बैज लगाये हुए हूँ, सफ़ेद कपड़े पहने हुए हूँ, ट्रेन में जा रहा हूँ। कोई मेरे से गलत व्यवहार



मुम्बई-थाने (लाइट हाउस)। एकनाथ शिंदे, कैबिनेट मिनिस्टर, महा. एवं शिव सेना लीडर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. सरला बहन।



दिल्ली-खेडा कलां। नरेला केन्द्र के पूर्व विधायक नीलदमन खत्री को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शुभ्रा बहन।



भुसावर-भरतपुर (राज.)। उपखण्ड अधिकारी मुनिदेव यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन।



नई दिल्ली। केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री, भारत सरकार डॉ. भागवत किशनराव कराड को उनके दिल्ली स्थित निवास स्थान पर रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन। इस मौके पर ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके तथा ब्र.कु. पंकी बहन उपस्थित रहे।



टूंडला-जीवनी नगर (उ.प्र.)। एस.डी.एम. श्रीमति बुशरा बानो को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शालू बहन।



मुम्बई-सांताक्रूज़ वेस्ट। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता राकेश ओम प्रकाश मेहरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विनीता बहन।



आगरा-नवपुरा (उ.प्र.)। शिवकुमार जी, चौकी प्रभारी, बमरौली कटारा, आगरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशी बहन।



व्यारा-गुज। डोलवन तालुका के पी.एस.आई. वी.आर. वसावा को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. मनीषा बहन।



मुम्बई। महाराष्ट्र के डेप्युटी चीफ मिनिस्टर अजीत पवार को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन द्वारा लोकडाउन में महाराष्ट्र सरकार द्वारा उठाये गये कदमों के लिए 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' से सम्मानित किया गया। अजीत पवार को उनके मंत्रालय स्थित कार्यालय में 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट (स्वीटजरलैंड)' देकर सम्मानित करते हुए वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लंदन के राष्ट्रीय सचिव डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।



डिब्रूगढ़-असम। सर्वानंद सोनोवाल, सेंट्रल मिनिस्टर ऑफ पोर्ट्स, वाटरवेज, शिपिंग एंड मिनिस्टर ऑफ आयुष, इंडिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।



भरतपुर-राज. डॉ. सुभाष गर्ग, विधायक भरतपुर, तकनीकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य मंत्री, राज. सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. बबीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. प्रवीणा बहन तथा ब्र.कु. जुगल किशोर भाई।



वलसाड-गुज. कलेक्टर श्रीमति क्षिप्रा अगरे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रंजन बहन, उपक्षेत्रीय संचालिका।



उदयपुर-राज. आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के प्रिन्सीपल डॉ. पोसवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रीटा बहन।



सिरसागंज-उ.प्र. एस.एच.ओ. प्रविन्द सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीतांजलि बहन। साथ हैं ब्र.कु. शशी बहन।

आपके हर कार्य की शुरुआत परमात्म आह्वान के साथ



ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

अमृतवेले और मुरली क्लास तक तो हरेक की दिनचर्या ठीक रहती है। क्योंकि इस समय को वरदान है। और समय को वरदान होने के कारण उस समय में विशेष बाबा की मदद भी मिलती है। तो उस समय हमने अगर कर लिया वो तो ठीक ही है लेकिन उसके बाद मुख्य रूप से सुबह-सुबह ऐसा कोई स्वमान ले लेते हैं और उस स्वमान के ऊपर अभ्यास करते हैं। स्वमान पर अभ्यास करना भी जब हम भूल जाते हैं तो आजकल तो साईंस ने बहुत सारी विधियां दी हैं हमें कि भाई आप अपने मोबाइल में ही हर घंटे का एक बीप दो। जैसे ही बीप बजेगा आपको याद आयेगा कि मुझे आज के स्वमान में स्थित होना है। और उस समय एक मिनट के लिए या दो मिनट के लिए आप बाबा को याद कर लो। तो ये विधि अपना सकते हैं। या जिस तरह से हमारा ट्रैफिक कंट्रोल बजता है, वो ट्रैफिक कंट्रोल के समय भी अटेंशन में आ जाये। तो ये ट्रैफिक कंट्रोल बजा, कितनी बाबा की याद रही और कितना भूल गये। कोई भी रीति

से, कोई भी विधि से ऐसा महसूस करें कि बाबा मेरे साथ है। कुछ भी विचार चलते हैं ना, कोई भी कर्म करते हुए विचार तो चलते ही हैं ना! तो उस समय बाबा के साथ हमारी ऐसी रूहरिहान हो कि बाबा के साथ वातालाप करें। कोई भी बात को लेकर, जैसे कि हम बाहर जा रहे हैं तो बाबा आपको साथ चलना है। आज फलानी जगह जायेंगे, ये करेंगे, ऐसा करेंगे, कोई भी कार्य आरम्भ करो तो दो मिनट के लिए या एक मिनट के लिए भी थोड़ा साइलेंट हो जाओ। बाबा का आह्वान करो और फिर वो कार्य आरम्भ करो। जब इस विधि को अपनाते हैं चाहे बीप रख दो, ट्रैफिक कंट्रोल को लेकर करो, चाहे बाबा के साथ कोई न कोई सम्बन्ध के आधार पर जब आप रूहरिहान करते हो,

जितना मन ही मन बाबा से बातचीत हमारी होती रहेगी, उतना नैचुरल योगी हम बनते रहेंगे

खाना बना रहे हो। मान लो कि आप सोच रहे हैं कि बाबा की पसंद का खाना हम बना रहे हैं तो मन ही मन बाबा से बातचीत करते जाओ। जितना मन ही मन बाबा से बातचीत हमारी होती रहेगी उतना नैचुरल योगी बनते जायेंगे। बाबा ने भी इसीलिए बच्चों को यही कहा कि बच्चे 2-4 बार आकारी, निराकारी अभ्यास करो, हर घंटे पर उसका अभ्यास करो। भावार्थ बाबा का यही है कि अभ्यास करते-करते बार-बार अटेंशन जायेगा कि घंटा बीत तो नहीं गया।

उससे क्या होगा कि एक नैचुरल, निरन्तर स्थिति हमारी बनने लगेगी। कोई भी चीज को बार-बार जब स्मृति में लाते हैं तो स्मृति में लाने से वो हमारी शक्ति बन जाती है, समर्थी अन्दर में आने लगती है। शुरू में थोड़ी मेहनत लगती है हमें लेकिन उसके बाद एक नैचुरल अभ्यास होने लगता है कि जैसे ही कुछ हुआ तो सोचेंगे कि हाँ बाबा को याद करना है। बाबा का आह्वान करना है। इस कर्म में बाबा को साथ लेकर चलना है। तो इस तरह से जैसे-जैसे आप ये करते जायेंगे, अभ्यास बढ़ाते जायेंगे तो बहुत अच्छा लगेगा। साथ ही साथ मान लो कि आप कार्यक्षेत्र पर हो तो कार्यक्षेत्र पर कैसे करें? तो जिस तरह से ट्रैफिक कंट्रोल होता है, आप सोचेंगे कि सबके बीच में हम होते हैं। ट्रैफिक कंट्रोल कैसे करें! तो यही आता है मन के अन्दर कि जो भी कार्य करने वाले साथी हैं उन सबको भी ये रंग चढ़ाना शुरू करें कि हमारे ईश्वरीय विश्वविद्यालय के अन्दर ऐसे ट्रैफिक कंट्रोल बजता है। जैसे हमारे इतने विचार चलते हैं तो उन विचारों को बीच-बीच में थोड़ा सा शांत करके मन को ईश्वर में एकाग्र करना होता है। तो आप सभी भी उस अटेंशन में आ जायें। हो सकता है कि लोग दो-चार दिन हैंसी भी उड़ा सकते हैं कि क्या कर रहे हो। लेकिन जैसे-जैसे उन्हें मालूम पड़ेगा और आप एकदम शांत होकर बैठेंगे फिर उनको महसूस होगा कि ये जो बीच-बीच में कर रहा है ना उससे इसका मन कितना शांत हो जाता है। - क्रमशः



शिमला-हि.प्र. शहरी मंत्री सुरेश भारद्वाज को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. भारत भूषण भाई तथा अन्य।



ढूंढला-जीवनी नगर(उ.प्र.)। सांसद चंद्र सेन जादौन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शालू बहन। साथ हैं ब्र.कु. शशी बहन।



कादमा-हरियाणा। बहन चित्रलेखा, निदेशक, गृह मंत्रालय भारत सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वसुधा बहन।



सोनीपत-हरियाणा। मेयर निखिल मदान को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. प्रमोद बहन।



जावरा-म.प्र. थाना प्रभारी वी.डी. शर्मा व स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सावित्री बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क - 9414006096, 9414182088,

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनौअंडर या

बैंक ड्राफ्ट (पेबल एर शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

For Online Transfer

SBI ACCT. NO. - 30826907041

IFSC - CODE - SBIN0010638

सूचित अवश्य करें...





जो नहीं है... उस अस्तित्व की लड़ाई किसलिए!

परमात्मा हमसे जो कुछ भी कराना चाहते हैं, उसका हमें लिखित प्रमाण भी देते हैं। उनका एक अस्तित्व है, अस्तित्व वाला कोई भी हो, वो उस दौर के उन महकमों में शामिल होता है, जो चल रहा होता है। हम सभी परमात्मा के अस्तित्व को जानते भी हैं, पहचानते भी हैं, लेकिन नींव हमारी मज़बूत बनी नहीं, कारण... जाना भी थोड़ा, पहचाना भी थोड़ा, ऐसे से प्रार्थना भी थोड़ी ही है। हम सभी ऊपर से कहते रहते हैं कि सबकुछ भगवान ही कर रहा है, अंदर से डर भी लग रहा है, तभी तो इंतज़ाम कर रहे हैं। सभी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं।

कहावतें कही जाती रही हैं, सबकुछ हम सबको छोड़ कर जाना है, वो चीज़ हमारी धारणा में हो कि छोड़ना तो है ही, चाहे ज़बरदस्ती ही छोड़ें, लेकिन आगे फिर पकड़ने का सिलसिला भी छोड़ें तब ना! जो यहाँ सब कुछ छोड़ेगा, उसे ही पूरा विश्व मिलेगा। सुबह से लेकर शाम तक बस अस्तित्व की लड़ाई। कोई बोलकर, जताकर, बताकर, अपनी बुद्धि दिखाकर दर्शा रहे हैं कि 'हम हैं'। अरे! आप नहीं हैं तभी तो 'हैं' को दर्शा रहे हैं। अगर आप हमेशा होते तो आपको यह सब बताने और जताने की लड़ाई नहीं लड़नी पड़ती। हम आप सोचें कि विश्व महाराज लड़ाई लड़ेंगे क्या! अभी लड़ाई हाथों की शक्ति ही है, किस-किस से लड़ेंगे? हमारे अस्तित्व में ही एक-दूसरे के प्रति भाव कॉम्पैटिशन के आते हैं, जिसमें ईर्ष्या व नफरत पैदा होती है।

शुरुआत घर में, कहते हैं... कि घर में एक आत्मा आई। उस समय उसका कोई नाम नहीं, सिर्फ एक बच्चा जो हाथ-पाव मारता हुआ आपके सामने है, रीयल है, वास्तविक है। वो अपनी न पहचान बना रहा है, न बता रहा है, न जता रहा है। सिर्फ किलकारियां ले रहा है, आस-पास खड़े सभी उसके अस्तित्व को समझ रहे हैं कि ये आत्मा है, भगवान का रूप है, वो तो नहीं बता रहा है। असली आत्मिक स्थिति यही है और वास्तविकता है कि हमें कुछ न कहना पड़े, कुछ न सोचना पड़े, लोग हमारे लिए इंतज़ार करें, इंतज़ाम करें और सोचें।

जो भी अस्तित्व शरीर का है, वो दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। हम सभी समझदार बन गए तो कैसी लड़ाई व कैसा भ्रम! आपको भी यह बात पता है कि आप किसी को भी नहीं बचा पायेंगे, तो क्यों नहीं वैराग्य आ रहा है! जब तक वैराग्य जान-बूझकर नहीं आयेगा अर्थात् समझकर हम ये सारी चीज़ें नहीं छोड़ेंगे, तब तक खुशी अंदर हमेशा हो नहीं सकती। वैराग्य का आधार अभ्यास... अभ्यास...। बस एक बात, हम सभी कुछ दिन के मेहमान हैं, सब कुछ छोड़ कर जाना है। यह अभ्यास हमें खुशी देगा। क्योंकि शारीरिक अस्तित्व जैसे ही छूटा, खुशी बढ़ जायेगी। फिर कोई इंतज़ाम नहीं, कोई स्थिति नहीं, कोई मूड खराब नहीं। जो होगा वो अच्छा ही है, क्योंकि हम अब अस्तित्व से ऊपर उठ गए। इसी का मिसाल तो सीता जी का है, जो अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही थीं कि मैं आपकी पत्नी हूँ, पवित्र हूँ, प्रमाण देने के लिए परीक्षा पर परीक्षा, कितनी परीक्षाएँ! तो दिखाया जाता है कि बुद्धि जब सबको समझा नहीं पाती तो वैराग्य आता है, देहभान, शरीर का भान टूटता है, वहाँ भी टूटा, धरती फटी, सीता समा गयीं। माना देहभान नष्ट। इसलिए अस्तित्व की लड़ाई ही दुःख पैदा करती है। जो वैराग्य से पैदा होता प्यार व खुशी, वो अविनाशी होता, उसे कोई छीन नहीं सकता, उसे कोई हरा नहीं सकता। सीता के दो बच्चे लव और कुश इसी के प्रतीक हैं, जिन्होंने अपने सभी सगे-सम्बंधियों को युद्ध में हरा दिया। बस ऐसा वैराग्य कि दोबारा उस दुनिया का कोई भी हमसे बंधन न पाए, सब मूर्छित हो जाए हमारी तरंगों से। इसलिए अस्तित्व को छोड़ो, बस वास्तविकता से नाता जोड़ो। जीवन का मर्म यही है और यही कटु सत्य है।

दिल की बात

साकार मुरली का भाव और अनुभूति की कलम
हम बिगड़े तो जग बिगड़ा, हम सँवरे तो जग सँवरेगा। स्व की सत्यता और परमात्म परिचय से दिल को 'समझ' के वो आयाम मिले, बातों के उत्तर दिल बाहर तत्वों में खोज करता था, आत्मा को ज्ञान में दिल के भीतर ही मिले। प्यारे बाबा ने समझाया कि तत्वों सहित समस्त मानव को बदलने वाली एक ही यह जादुई युनिवर्सिटी है जहाँ सबकी सद्गति होती है। इसलिए कहीं नहीं भटकना है, बाबा के संग घर में, रीयल वर्ल्ड युनिवर्सिटी के ज्ञान-योग में गहरे डूब जाना है। घर में ही सब कुछ मिल रहा, भला ऐसा जादू और कहाँ! जिस भगवान के लिए दिल आतुर था, स्थूल के बीच घिरा हुआ सुक्ष्मता को खोज रहा था, जब वो ही पा लिया तो निश्चयी दिल को स्थूल आँखों से दिखता संसार ज्ञान से भूल जाना है और भीतरी आँख से अपने प्यारे घर को निहारना है। अब अटूट निश्चयी दिल के सारे लेनदेन एक बाबा के साथ करने हैं, पतितों के साथ नहीं, क्योंकि रावण मत और मनमत पर चलने के नतीजे ने आत्मा का कितना बुरा हाल किया है! अब नया दौर आने को है जिसमें पुराना सब बदल नया हो जाएगा। झूठखण्ड गायब होकर पुनः सचखण्ड मुस्करायेगा। भक्ति, दुःखों की रात गायब हो ज्ञान दिन में सुख का सवेरा मुस्करायेगा। अब दिल को हर बात में बाबा से ही राय लेनी है। प्यार और सुख के सागर बाबा प्यार की वो प्यारी दुनिया सजाते हैं जहाँ हर बात प्यारी है। केवल आत्म-साक्षात्कार कोई जादू नहीं करेगा, ज्ञान को जीकर संस्कार मीठे और पावन बनाने से ही सारा कमाल होगा।

प्यारे बाबा के साथ को पाकर दिल ऐसा शक्तिशाली हो जाता है कि समस्याएँ फिर दिल को हिलाती नहीं हैं बल्कि शक्तियों से सजाकर ऊँचा उठाती हैं। दिल को हर समस्या पहचानी ही लगती है कि हर कल्प पार पहुंचे हैं। बहादुर दिल हैरान न होकर संतुष्ट ही रहता है कि इतना बड़ा भगवान मेरे साथ है तो समस्या में शक्ति न लगाकर झट निवारण करता है।



राय पिथौरागढ़-उत्तराखण्ड। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट डॉ. आशीष चौहान को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कनिका।



वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। गणदेवीकर ज्वैलर्स के ओनर्स सुनील भाई गणदेवीकर व सी.ई.ओ. रूपील भाई गणदेवीकर सहित स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सरिता बहन तथा ब्र.कु. वंदना बहन।



मुम्बई-मलाड। इंडियन आर्मी द्वारा रक्षाबंधन कार्यक्रम के लिए ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में ब्र.कु. कुंती दीदी ने रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करने के पश्चात् कर्नल दीपक कुमार तथा अन्य ऑफिसर्स सहित सभी जवानों को रक्षासूत्र बांधा। ब्र.कु. शोभा बहन ने ब्रह्माकुमारी संस्थान का परिचय दिया। कर्नल दीपक कुमार ने संस्थान की सराहना करते हुए कहा कि लोगों की निःस्वार्थ सेवा करने वाला ये बेस्ट और बिगस्ट संस्थान है।



गोवा-पणजी। वीकनेक्ट स्टार ईवेंट्स एंड एंटरटेनमेंट द्वारा गोवा स्थित होटल पार्क रेगिंस में आयोजित 'इंटरनेशनल ग्लोरी अवॉर्ड्स 2021' में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सोनू सूद द्वारा अहमदनगर, महा. के डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को भारत के प्राचीन राजयोग के प्रचार-प्रसार के लिए 'इंटरनेशनल ग्लोरी अवॉर्ड 2021' प्रदान किया गया। तत्पश्चात् सोनू सूद को संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू आने का निर्मंत्रण देकर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. वनिता बहन।



फिल्लौर-पंजाब। डी.एस.पी. हरनील सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी बहन।

आपका अच्छा स्वास्थ्य... गाजर के साथ

गाजर खाने के फायदे



बढ़ाये आँखों की रोशनी :

गाजर में विटामिन-ए पाया जाता है। जो आँखों का स्वास्थ्य बनाए रखता है। उम्र का प्रभाव होने के कारण आँखों में मोतियाबिंद की शिकायत हो जाती है। बीटा कैरोटीन इससे आँखों को बचाता है। अगर नियमित रूप से गाजर का सेवन करते हैं तो यह आपकी आँखों की रोशनी तेज करती है। विटामिन-ए रेटीना के अंदर स्थित रहता है, यह बैंगनी रंग का दिखता है। गाजर का सेवन करने से रतौधी जैसा रोग नहीं होता।



चेहरे पर लाए निखार :

गाजर को सलाद, जूस या फिर कच्चा भी खा सकते हैं। गाजर से त्वचा पर निखार आता है और चेहरे की चमक बरकरार रहती है। गाजर सूर्य से आने वाली हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों से चेहरे को सुरक्षित रखता है। गाजर फेशियल का काम करता है। गाजर चेहरे पर कील, मुंहासे, पिंपल्स, छાइयाँ आदि आने से रोकता है। विटामिन-ए की कमी से त्वचा और नाखून रूखे हो जाते हैं। गाजर इस कमी को पूरा करता है।



दांतों को बनाए मजबूत :

कच्चा गाजर दांतों को स्वस्थ एवं मजबूत रखता है तथा मसूड़ों को भी मजबूती देता है। दांतों में कैविटीज़ लगने की समस्या और मुंह की बदबू से छुटकारा दिलाता है। गाजर एक टूथब्रश का काम करता है। जिससे दांत साफ हो जाते हैं। गाजर में मिनरल्स पाए जाते हैं, जो दांतों को क्षति होने से बचाते हैं। अगर बच्चों के दांत निकल रहे हैं तो आप बच्चों को गाजर का जूस पिलाएं, इससे बच्चे के दांत सही

निकलेंगे और इसके साथ ही दूध भी हजम हो जाएगा। गाजर खाने से दांतों से रक्त आने की समस्या दूर हो जाती है और दांतों में चमक भी बढ़ती है।



हृदय को रखे स्वस्थ :

गाजर खून में कोलेस्ट्रॉल का स्तर ठीक रखता है, जिससे हार्ट अटैक का खतरा नहीं होता। गाजर में



गाजर का वैज्ञानिक नाम **डॉक्स कैरोटाज** है। गाजर को औषधि के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। गाजर में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व... विटामिन-ए, विटामिन-ई, विटामिन-सी, विटामिन-के, विटामिन-डी, विटामिन-बी8, विटामिन-बी6, पैंटोथेनिक एसिड, फोलेट, पोटेथियम, फाइबर, बीटा कैरोटीन, लोहा, तांबा, मैग्नीज, कार्बोहाइड्रेट तथा प्रोटीन आदि पाये जाते हैं।

स्वास्थ्य

आमाशय रस के स्राव को भी उत्तेजित करता है।



दूर करे शरीर की कमजोरी :

गाजर और पालक के रस में भुना हुआ जीरा और काला नमक मिलाकर पीने से शरीर की थकान और कमजोरी दूर हो जाती है। इसलिए रोज़ गाजर खाएं ताकि आपके शरीर में कमजोरी कभी ना आए।



दिमाग को तेज़ बनाए :

नियमित रूप से गाजर का सेवन किया जाए तो यह दिमाग को तेज़ बनाता है। गाजर से बनने वाला हलवा अगर 2 महीने तक लगातार खाया जाए तो याददाश्त तेज़

होती है। 500 मिलीलीटर दूध में 125 मिलीलीटर गाजर का रस मिलाकर सुबह बादाम खाने से कुछ देर बाद पीने से मस्तिष्क की कमजोरी दूर हो जाती है।



खूनी बवासीर में फायदे :

खूनी बवासीर, खूनी दस्त और रक्त प्रदर की अधिकता होने पर यदि गाजर का सेवन किया जाए तो यह बहुत फायदेमंद होता है। गाजर के रस में बकरी के दूध से बनी दही मिलाकर सुबह पीड़ित व्यक्ति को पिलाया जाए तो खूनी बवासीर में जल्दी आराम मिलता है। बवासीर में अनारदाना तथा दही के साथ पकाया हुआ गाजर का काढ़ा पिया जाए तो बवासीर में फायदा मिलता है।



घाव करे ठीक :

चोट लगने पर यदि गाजर का जूस चोट वाली जगह पर लगाया जाए तो घाव जल्दी ठीक हो जाता है, क्योंकि गाजर में विटामिन-सी पाया जाता है। गाजर का जूस चोट में बहने वाले रक्त को भी कम करता है। साथ ही विटामिन-के चोट को जल्दी ठीक करने में मदद करता है।



बालों के लिए फायदेमंद :

बालों से सम्बंधित समस्या हर किसी को है। महिलाओं में यह समस्या ज़्यादा देखने को मिलती है। बालों में रूखापन, बालों में जुएं, बालों का झड़ना, सफेद बाल होना, दो मुहे बाल होना, बालों का पतला होना आदि समस्याएं हो जाती हैं। गाजर का जूस पीने से या फिर कच्चा खाने से बालों की हर एक परेशानी दूर हो जाती है और बालों में मजबूती आने के साथ-साथ बाल मुलायम और स्वस्थ हो जाते हैं।



हड्डियों की मजबूती के लिए :

स्वस्थ और मजबूत हड्डियों के लिए गाजर बहुत अच्छा विकल्प है। गाजर में कैल्शियम की भरपूर मात्रा पाई जाती है। शरीर नियमित रूप से लगातार कैल्शियम की छोटी मात्रा को निकालता है जिससे नए कैल्शियम बनते हैं। अगर आपका शरीर हड्डियों से कैल्शियम की ज़्यादा मात्रा निकाल देता है तो हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। जिनकी जल्दी टूटने की संभावना हो जाती है। शरीर में कैल्शियम की मात्रा सही रहे, इसके लिए आपको गाजर का सेवन जरूर करना चाहिए।

गाजर खाने के नुकसान

गाजर खाने के जहाँ फायदे हैं, वहीं इसके नुकसान भी हैं :-

- ज़्यादा मात्रा में गाजर का सेवन करने से रंग फीका हो सकता है।
- गाजर ज़्यादा खाने से दस्त और कब्ज की शिकायत हो सकती है।
- अधिक मात्रा में गाजर खाने से गैस और पेट में दर्द हो सकता है।
- जरूरत से ज़्यादा गाजर खाने से उल्टी की दिक्कत हो सकती है।
- गाजर का अधिक मात्रा में सेवन पेशाब सम्बंधित समस्या पैदा कर सकता है।
- जिन्हें गाजर खाने से एलर्जी होती है, उन्हें गाजर नहीं खाना चाहिए।
- गाजर के अन्दर का पीला भाग बहुत ज़्यादा गर्म होता है, जिसका ज़्यादा मात्रा में सेवन करने से छाती में जलन पैदा हो सकती है।
- गाजर के ज़्यादा मात्रा में सेवन से अनिद्रा की समस्या भी हो सकती है।

नोट : इन घरेलू नुस्खों या उपचारों में से किसी का भी उपयोग करने से पहले अपने नज़दीकी डॉक्टर या अन्य स्वास्थ्य देखभाल प्रदाता से जरूर संपर्क करें।



नई दिल्ली। भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय के राज्यमंत्री कपिल पाटिल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन, सत्कार भवन। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।



बिहार शरीफ (नालंदा)। डिस्ट्रिक्ट जज डॉ. रमेश चंद्र द्विवेदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनुपमा बहन। साथ हैं ब्र.कु. पूनम बहन।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी (उ.प्र.)। जिलाधिकारी रमेश रंजन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शांता बहन।



सीतापुर-उ.प्र.। पुलिस अधीक्षक राकेश प्रकाश सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी बहन। साथ हैं ब्र.कु. ज्ञानू बहन।



हाथरस-उ.प्र.। विधायक हरिशंकर माहौर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भावना बहन।



बीदर-कर्नाटक। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुमंगला बहन, उपक्षेत्रीय संचालिका, राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा बहन, संचालिका, शिव शक्ति भवन, बसवराज जबशेद्वी, प्रेसीडेंट, डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी, बीदर, मादीवलप्पा मंगलगी, क्लास 1 कॉन्ट्रैक्टर बीदर एक्स पी.एल.डी. बैंक प्रेसीडेंट, भाल्की तथा बसवराज जी. शेतकर, प्रेसीडेंट, चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़, बीदर।

आपको क्या लगता... किसे बदलना आसान होगा?

अपने दोनों हाथों को आगे कीजिए। लेफ्ट हैंड पर परिस्थिति को रखिए, राइट हैंड पर अपने मन की स्थिति को रखिए। एक मिनट आँख बंद कीजिए और अपने मन की स्क्रीन पर गौर से देखिए उस पल को, लास्ट टाइम जब किसी ने आपके साथ बहुत गलत तरीके से व्यवहार किया था। वो आपका लेफ्ट हैंड है, परिस्थिति। अच्छे से देखना उस सीन को। अपशब्द बोले, झूठ बोला, धोखा दिया, नुकसान किया या सिर्फ कहना नहीं माना, वो लेफ्ट हैंड है। अब अपने आपको देखिए उस सीन में, बुरा लगा, गुस्सा भी हो गए, जोर से भी बात कर दी उनसे, रोना भी आ गया, रूठ भी गए, बात ही करना बंद कर दिया। ये राइट हैंड, मेरे मन की स्थिति थी। अब मुझे खुशी चाहिए तो मेरे पास दो ऑप्शन हैं, या तो लेफ्ट हैंड बदल जाये, वो अपना व्यवहार बदल दे कल से या राइट हैंड बदल जाये। मैं अपने सोचने का तरीका बदल दूँ, व्यवहार करने का तरीका बदल दूँ। दोनों में से अगर एक भी बदल जाये तो मेरे जीवन में सदा खुशी रहेगी। या तो लेफ्ट हैंड बदल जाये तो मैं खुश, या मैं उनके उस व्यवहार को देखकर पहले चुप रहूँ, समझूँ कि ये उनका व्यवहार है, उनके मन की स्थिति है आज की। वो मुझे नहीं कह रहे, वो खुद परेशान हैं। और फिर शांति से, प्यार से उनसे बात करें। अगर मैंने ऐसा किया तो भी मेरा जीवन खुश रह सकता है। आज मुझे इन



ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

परिस्थितियों को बदलना आसान या स्व को बदलना आसान, सोचने से इस बिन्दु पर पहुंचते कि स्वयं को बदलना तो मेरे हाथ में है, परिस्थिति तो पराई है, बाहर से आई है, वो मेरे हाथ में नहीं। बेहतर है कि हम स्वयं को बदलने में ही अपनी एनर्जी लगायें...

दोनों में से फाइनल करना है कि लेफ्ट हैंड चेंज हो सकता है या राइट हैंड चेंज हो सकता है। दोनों में कौन चेंज हो सकता है। क्योंकि दोनों में एक को तो चेंज होना ही होगा। क्योंकि अगर खुशी नहीं तो सेहत नहीं, रिश्ते नहीं, जीवन का उद्देश्य ही खत्म हो जाता है। क्या लगता है, कौन दोनों में से चेंज हो सकता है, लेफ्ट हैंड या राइट हैंड? किस-किस को अभी भी उम्मीद है कि हम लेफ्ट हैंड को चेंज कर सकते हैं? किस-किस ने

लेफ्ट हैंड को चेंज करने की कोशिश काफी की है? लेफ्ट हैंड को चेंज करने की कोशिश तो हमने बड़े सालों से की है। कुछ घरों में बहनों को घर बहुत अच्छा साफ रखने की आदत होती है। बहुत प्यारा संस्कार है। वो हर चीज एकदम एक्स्ट्रेट रखती हैं। लेकिन भाई साहब घर को आते हैं, बच्चे शाम को घर आते हैं, बैग इधर फेंकते हैं, फोन उधर फेंकते हैं, कपड़े उधर फेंकते हैं। और ये काम काफी सालों से चल रहा है। और रोज शाम को उस घर में एक छोटी सी आग्युमेंट हो ही जाती है। और हम ये भी नहीं सोचते कि हम रोज सेम बात पर आग्यु कर रहे हैं। चाहे तो घर में सफाई, लेकिन खुद ही आग्यु करके घर की एनर्जी को मैला कर देते हैं। इतनी मेहनत करके जो लड़ रहे हो, इससे अच्छा है चीजें रख दो जगह पर। कम एनर्जी लगेगी उसके अन्दर। कई बहनें कहती हैं कि जब हम सारा दिन काम करती हैं, सब ठीक करती हैं, तो क्या शाम को नहीं कर सकतीं, लेकिन अगर हमने ठीक कर दिया तो इनको कौन ठीक करेगा? इनको ठीक करने का हम काफी प्रयास कर रहे हैं, काफी सालों से। ये एक बहुत शुभ इच्छा है कि दूसरे बदल जायें। तो हम काफी सालों से लेफ्ट हैंड को चेंज करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन आज हमें इस चीज को छोड़ देना चाहिए। आज हम सोच लें कि अब हम लोगों को बदलने की कोशिश नहीं करेंगे। - क्रमशः

एक नई सोच

{ कर्मों की गति }

परमात्मा को प्यार का सागर क्यों कहते हैं? क्योंकि हम चाहे कितने भी बुरे कर्म करें, वह फिर भी हमें निष्काम प्यार देता है। कमी उसके देने में नहीं, बल्कि हमारे ही बुरे कर्मों के कारण हमारे लेने की क्षमता में आ जाती है। क्योंकि बुरे कर्मों अर्थात् पाप कर्मों के कारण हमारी मन-बुद्धि इतनी कमजोर हो जाती है, जिससे परमपिता परमात्मा के समीप पहुंच पाना या उनसे मिलना असंभव हो जाता है। इसलिए चाहे माता- पिता या कोई मित्र सम्बंधी हैं। बुरे कर्म में किसी का भी साथ मत दीजिये, क्योंकि कर्मों की गति में कोई रिश्ता नहीं चलता।

अतः उस एक परमपिता परमात्मा को सच्चा साथी बना कर चलें और अपने कर्मों में श्रेष्ठता लाएं। तभी जीवन में सच्चा सुख और शांति प्राप्त हो सकेगी।



बिलासपुर-तिफरा(छ.ग.)। विधायक श्रीमति रश्मि आशीष सिंह को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी बहन।



दिल्ली-हरिनगर। सौरभ श्रीवास्तव, मेट्रो एडिटर, दैनिक जागरण को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उमा तथा ब्र.कु. शालू।



इंदौर-प्रेमनगर(म.प्र.)। जीतू पटवारी, विधायक एवं पूर्व शिक्षा राज्यमंत्री को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशि बहन।



रतलाम-म.प्र.। माणक चौक थाने के टी.आई. दिलीप राजोरिया एवं समस्त स्टाफ को रक्षामूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. राजेश मोडीया तथा ब्र.कु. ललित केसवानी।



भुजपुर-मुन्ना कच्छ(गुज.)। मेघराज गढ़वी, जिला कारोबारी समिति चेयरमैन को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुशीला बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका।



राजसमंद-राज. जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पूनम बहन। साथ हैं ब्र.कु. गौरी बहन।



नेपाल-कलैया। प्रदेश नं-2 के प्रदेश सभा सदस्य पारस साह को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीना बहन।



कोरापुट-ओडिशा। बी.एस.एफ डिप्टी कमाण्डेंट अरुण कुलकर्णी को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. स्वर्णा बहन।



लोहरदगा-झारखण्ड। डॉ. इलीना, उर्सुला हॉस्पिटल इंचार्ज को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शांति बहन।



फरीदपुर-बरेली(उ.प्र.)। प्रभारी निरीक्षक विजय प्रताप सिंह को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पारुल बहन।



नखत्राणा-कच्छ(गुज.)। विधायक प्रथुमन सिंह जाडेजा को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण बहन।



मोकामा-बिहार। थाना प्रभारी राजनंदन जी को रक्षामूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निशा बहन।



फिरोजपुर कैंट-पंजाब। बी.पी. सिंह, ए.डी.आर.एम., रेलवे फिरोजपुर को रक्षामूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. शक्ति बहन।



बरनाला-पंजाब। जिला न्यायालय में सेशन जज नरेन्द्र कुमार व एडिशनल जज बलजिन्दर सिंह को रक्षामूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ब्रिज बहन, ब्र.कु. सुदर्शन बहन तथा अन्य।

परमात्म ऊर्जा

खुशी से किया...बंधन नहीं लगता

भारत में कहते हैं, जि त न। कायदा उतना फायदा। तो ये जो कायदे बने हुए हैं, नियम बने हुए हैं, उसको कभी भी मिस नहीं करना है। देखो, आपके भक्त अभी तक आपका नियम पालन कर रहे हैं। चाहे मंदिर में मन नहीं भी लगे तो भी जायेंगे जरूर। यह किससे सीखे? आप लोगों ने सिखाया ना! सदैव यह अनुभव करो कि जो भी मर्यादायें व नियम बने हैं, उसको बनाने वाले हम हैं। आपने बनाया है या बने हुए मिले हैं? लॉ मेकर्स हो या नहीं? अमृतवेले उठना - यह आपका मन मानता है या बना हुआ है इसलिए इस पर चलते हो - आप स्वयं अनुभव करते, चलते हो या डायरेक्शन या नियम बना हुआ है इसलिए चलते हो? आपका मन मानता है ना! तो जो मन मानता है, वह मन ने ही बनाया ना! कोई मजबूरी से तो नहीं चल रहे हो - करना ही पड़ेगा। सब मन को पसंद है ना? क्योंकि जो खुशी से किया जाता है उसमें बंधन नहीं लगता है। यहाँ परमात्मा ने आदि, मध्य, अंत - तीनों कालों की नॉलेज दे दी है। कुछ भी करते हो तो तीनों

कालों को जान कर के और उसी खुशी से करते हो। बाबा देखते हैं कि कमाल करने वाले बच्चे हैं। बाबा से प्यार अटूट है इसलिए कोई भी बात होती है तो भी उड़ते रहते हैं। बाबा से प्यार में सभी फुल पास हो। पढ़ाई में नम्बरवार हो लेकिन प्यार में नम्बरवन हो। सेवा भी अच्छी करते हैं, लेकिन कभी-कभी थोड़ा खेल दिखाते हैं। जैसे बाबा से नम्बरवन प्यार है, ऐसे मुरली से भी प्यार है? जब से आये हो तब से कितनी मुरलियां मिस हुई होंगी! कभी कोई ऐसे बहाने से क्लास मिस किया है? जैसे बाबा को याद करना मिस नहीं कर सकते, ऐसे पढ़ाई मिस न हो। इसमें भी नम्बरवन होना है। पिता के रूप में याद, शिक्षक के रूप में पढ़ाई और सतगुरु के रूप में प्राप्त वरदान कार्य में लगाना - इन तीनों में नम्बरवन चाहिए। वरदान तो सबको मिलते हैं ना, लेकिन समय पर वरदान को कार्य में लगाना - इसको कहते हैं वरदान से लाभ लेना। तो यह तीनों ही बातें चेक करना कि आदि से अब तक इन तीनों बातों में कितना पास रहे, तब विजय माला के मणके बनेंगे।

कथा सरिता



एक समय की बात है, एक संत प्रातःकाल भ्रमण हेतु समुद्र के तट पर पहुंचे। समुद्र के तट पर उन्होंने एक पुरुष को देखा जो एक स्त्री की गोद में सर रख कर सोया हुआ था। पास में शराब की खाली बोतल पड़ी हुई थी। संत बहुत दुःखी हुए। उन्होंने विचार किया कि ये मनुष्य कितना तामसिक और विलासी है, जो प्रातःकाल शराब सेवन करके, स्त्री की गोद में सर रख कर प्रेमालाप कर रहा है।

थोड़ी देर बाद समुद्र से बचाओ, बचाओ की आवाज आई। संत ने देखा, एक मनुष्य समुद्र में डूब रहा है, मगर स्वयं तैरना नहीं आने के कारण संत देखते रहने के अलावा कुछ नहीं कर सकते थे। स्त्री की गोद में सर रखकर सोया हुआ व्यक्ति उठा और डूबने वाले को बचाने हेतु पानी में कूद गया। थोड़ी देर में उसने डूबने वाले को बचा लिया और किनारे ले आया।

संत विचार में पड़ गए कि इस व्यक्ति को बुरा कहें या भला! वो उसके पास गए और बोले भाई तुम कौन हो, और यहाँ क्या कर रहे हो? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया :- मैं एक मछुआरा हूँ, मछली मारने का काम करता हूँ। आज कई दिनों बाद समुद्र से मछली पकड़

प्रातः जल्दी यहाँ लौटा हूँ। मेरी माँ मुझे लेने के लिए आई थी और साथ में (घर में दूसरा कोई बर्तन न होने पर) इस मदिरा की बोतल में पानी ले आई। कई दिनों की यात्रा से मैं थका हुआ था और भोर के सुहावने वातावरण में ये पानी पी कर थकान कम करने माँ की गोद में सिर रख कर ऐसे ही सो गया। संत

की आँखों में आँसू आ गए कि मैं कैसा पातक मनुष्य हूँ, जो देखा उसके बारे में मैंने गलत विचार किया जबकि वास्तविकता अलग थी। कोई भी बात जो हम देखते हैं, हमेशा जैसी दिखती है वैसी होती नहीं है। उसका एक दूसरा पहलू भी हो सकता है। किसी के प्रति कोई निर्णय लेने से पहले सौ बार सोचें और तब फैसला करें।

दूसरा पहलू भी हो सकता है



चारों ही अग्नि से शीतल हो गये हो ना सभी



विनाश ज्वाला की अग्नि से बचने का साधन - निर्भयता की शक्ति। विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन - अपने आदि-अनादि वंश की याद। देह के सम्बंध और पदार्थ के ममता की आग से बचने का साधन - बाबा ही संसार।

पश्चाताप की अग्नि से बचने का साधन - सर्व प्राप्ति स्वरूप बनो।

निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी। विनाश देखते भी स्थापना के नज़ारे देखेंगे। उसकी एक आँख में मुक्ति 'स्वीट होम', दूसरी आँख में 'जीवन मुक्ति' अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। लोग चिल्लाएंगे हाय गया, हाय मरा और आप कहेंगे, अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू। यह घुंघरू पहनेंगे। हमारा घर, हमारा राज्य - इस खुशी में नाचते-गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लाएंगे और आप साथ चलेंगे। सुनने में ही सबको खुशी हो रही है तो उस समय कितनी खुशी में होंगे! विनाश ज्वाला से बचने का साधन है - 'निर्भयता'। ऐसे ही दूसरा, विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन

है- अपने आदि-अनादि वंश को याद करो। अनादि बाबा का वंश, सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश देव आत्मा हूँ। देव आत्मा 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदि वंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा।

ऐसे ही तीसरा, देह, देह के सम्बन्ध और पदार्थ के ममता की आग- इस अग्नि से बचने का साधन है- बाबा को संसार बनाओ। बाबा ही संसार है। तो बाकी सब असार हो जायेगा। लेकिन करते क्या है! बाबा ही संसार है, यह याद है तो न देह, न सम्बन्ध, न पदार्थ रहेगा। सब समाप्त। चौथी बात, पश्चाताप की आग- इसका सहज साधन है- सर्व प्राप्ति स्वरूप बनना। अप्राप्ति समाप्त। तो चारों ही आग से शीतल हो गये हो ना? सुनाया ना, अब इन चारों बातों को चेक करो, तब ही शीतलता स्वरूप बन जायेंगे। औरों की तपत को बुझाने वाले 'शीतल योगी व शीतला देवी' बन जायेंगे।

एक बार श्री कृष्ण, बलदेव एवं सात्यकि रात्रि के समय रास्ता भटक गये। सघन वन था। न आगे राह सूझती थी और न पीछे लौट सकते थे। निर्णय हुआ कि घोड़ों को बांधकर यहीं रात्रि में विश्राम किया जाये। तय हुआ कि तीनों बारी-बारी जाग कर पहरा देंगे।

सबसे पहले सात्यकि जागे, बाकी दोनों सो गये। एक पिशाच पेड़ से उतरा और सात्यकि को मल्ल युद्ध के लिए ललकारने लगा। पिशाच की ललकार सुनकर सात्यकि अत्यंत क्रोधित हो गये। दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा। जैसे-जैसे पिशाच क्रोध करता, सात्यकि दुगुने क्रोध से लड़ने लगते। सात्यकि जितना अधिक क्रोध करते उतना ही पिशाच का आकार बढ़ता जाता। मल्ल युद्ध में सात्यकि को बहुत चोटें आईं। एक प्रहर बीत गया, अब बलदेव जागे। सात्यकि

ने उन्हें कुछ न बताया और सो गये। बलदेव को भी पिशाच की ललकार सुनाई दी। बलदेव क्रोधपूर्वक पिशाच

क्रोध रूपी पिशाच



से भिड़ गये। लड़ते हुए एक प्रहर बीत गया। उनका भी सात्यकि जैसा हाल हुआ। अब श्रीकृष्ण के जागने की बारी थी। बलदेव ने भी उन्हें कुछ न बताया

एवं सो गये। श्री कृष्ण के सामने भी पिशाच की चुनौती आई। पिशाच जितने अधिक क्रोध में श्री कृष्ण को संबोधित करता, श्री कृष्ण उतने ही शांत भाव से मुस्करा देते, पिशाच का आकार घटता जाता। अंत में वह एक कीड़े जितना रह गया जिसे श्री कृष्ण ने अपने पटुके के छोर में बांध लिया। प्रातःकाल सात्यकि व बलदेव ने अपनी दुर्गति की कहानी श्री कृष्ण को सुनाई तो श्री कृष्ण ने मुस्करा कर उस कीड़े को दिखाते हुए कहा, यही है वह क्रोध रूपी पिशाच! जितना तुम क्रोध करते थे, इसका आकार उतना ही बढ़ता जाता था। पर जब मैंने इसके क्रोध का प्रतिकार क्रोध से न देकर शांत भाव से दिया तो यह हतोत्साहित होकर दुर्बल और छोटा हो गया। अतः क्रोध पर विजय पाने के लिए संयम से काम लें।



इंदौर-कालानी नगर। बी.एस.एफ. के एस.टी.सी. कैम्पस में जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में बी.एस.एफ. सब-इंस्पेक्टर जीतेन्द्र सिंह, ए.एस.आई. शंकर लाल, ब्र.कु. सुजाता बहन, ब्र.कु. कविता बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों के साथ बीएसएफ के जवान।



महेश्वर-म.प्र.। उप जेल, महेश्वर में जेलर ऐश्वर्यचंद मिश्रा, जेल स्टाफ तथा कैदी भाइयों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनीता बहन।

क्या पूजा करने से मिल जाती हैं शक्तियाँ...!!!

मूल्यों से अभिभूत मनुष्य को सभी सम्मान देते हैं। लेकिन जो व्यक्ति गुणों से सम्पन्न है उसको लोग अति विशिष्ट मानते हैं। वहीं कोई व्यक्ति शक्तियों से सम्पन्न है तो लोग उसकी पूजा करते हैं। अब स्थूल रूप से शक्ति को समझें तो कोई राजनीतिक रूप से, कोई आर्थिक रूप से, कोई सामाजिक रूप से कहीं अपनी बहुत ऊँची पहुंच रखता है तो उसको लोग अति विशिष्ट और शक्तिशाली मानते हैं, उससे जाकर मदद मांगते हैं जहाँ-जहाँ उन्हें समस्या आती है। ये लौकिक में भी कितना कारगर है आपको पता होगा। लेकिन हर कार्य बाहुबल से संभव नहीं है। कई बार जब हम किसी ऐसी स्थिति में पहुंच जाते हैं जहाँ पैसा भी है, राजनीतिक पावर भी है, सामाजिक पावर भी है तो भी हम असहाय महसूस करते हैं। समझ का स्तर कहता है, वहाँ सिर्फ एक मानसिक बल हमें सहारा दे सकता

भाव होगा, उसमें हम बहुत शक्तिशाली महसूस करेंगे। लेकिन जिसमें लेने का भाव होगा, नाम-मान की इच्छा होगी, उसमें हम हमेशा मानसिक धरातल पर अपने आप को कमजोर पायेंगे।

इसीलिए आज लोग सोशल वर्क करके भी टेंशन में रहते हैं। इसीलिए पूजा-पाठ का भी मानसिक स्थिति में विशिष्टता आने पर ही लोग सहारा लेते हैं। डायलॉग में भी लोग कहते हैं कि हे माँ! शक्ति दे। कोई नहीं कहता, हे माँ! गुण दे। तो शक्ति सिर्फ निःस्वार्थ भाव से ही आती है। शक्ति आने का आधार विकारों से अपने

से। तो जब तक मन पूरी तरह से इन विकारिक भावनाओं से मुक्त नहीं होगा, तब तक हम शक्ति महसूस कर ही नहीं सकते।

इसलिए लोग इन दिनों में पवित्र रहते हैं, ये एक छोटा-सा उदाहरण है बस। लेकिन आज चाहे शारीरिक या मानसिक बीमारी है, दोनों को झेलने की शक्ति हमारे अंदर नहीं है, सिर्फ एक कारण, पवित्रता नहीं है, परमात्मा के साथ हम नहीं हैं। पूजा भी कर रहे हैं तो अपने घर में किसी की उन्नति के लिए, कोई पास हो गया, किसी की नौकरी लग गई, इसीलिए हम ये सब कर रहे

सभी भक्त कुछ न कुछ मन्नतें मांगते हुए शक्तियों की पूजा-आराधना करते हैं, व्रत रखते हैं, उपवास करते हैं। आखिर शक्ति ही क्यों चाहिए? गुण क्यों नहीं चाहिए? आराध्य के पास बैठकर कहते हैं कि हे माँ शक्ति दे, वरदान दे, ताकि हम सभी को सुख पहुंचा सकें अर्थात् सुख पहुंचाने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। और शक्ति कैसे आयेगी, इस बात को समझना ही आज का विषय है।



है। कहा जाता है, जब कोई काम नहीं आता तब दुआ काम आती है, हमारे कर्म काम आते हैं, हमारे पुण्य का खाता काम आता है।

इसलिए हमने गुण जरूर धारण किये लेकिन मानसिक रूप से सशक्त नहीं हुए, शक्तिशाली नहीं हुए, तो हम हर पल-हर क्षण परेशान होते रहेंगे। मानसिक बल, मानसिक शक्ति कम क्यों लगती है, क्योंकि हम स्वार्थ वश कार्य करते हैं। जब भी आप अपने बच्चे के लिए, अपने घर के लिए काम करते हैं, तो आप देखो कितना ज्यादा थके हुए महसूस करते हैं। वहीं आप जब दूसरों के लिए कार्य करते हैं, निःस्वार्थ भाव से करते हैं तो आपकी मानसिक थकावट बहुत कम होती है। तो जिस कार्य में ट्रस्टी का भाव, निमित्त का

आपको मुक्त रखना है। इसीलिए शायद जब नवरात्रों का समय होता है या कोई ऐसा कार्य होता है तो सब इन बातों से परहेज रखते हैं। वो तो एक मोटा रूप हो गया विकार का, लेकिन विकार कोई भी हो, चाहे वो मोह का है, चाहे लोभ का है, चाहे अहंकार का है, सब से हमारी शक्तियाँ क्षीण होती हैं। इसलिए दुर्गा जी को पवित्र दिखाया जाता है, कुंवारी दिखाया जाता है। राज क्या है इसमें कि जो पवित्र है मन से, तन से, विचार से, व्यवहार से, उसके आगे कोई भी बाधा, समस्या टिक नहीं सकती। तो ये पूजा करने से, पाठ करने से, मंत्र उच्चारण करने से शक्ति नहीं आती। शक्ति सिर्फ और सिर्फ आती है विकारों से अपने आप को छुड़ाकर पवित्र बनने

हैं, इसलिए नहीं कि हमें शक्ति मिले। इसलिए शक्ति को प्राप्त करने के लिए पवित्र बुद्धि, पवित्र दृष्टि, पवित्र सोच, पवित्र वायब्रेशन बनाना ही दुर्गा जी जैसा बनना है। इसमें किसी के साथ जुड़ाव हमें शक्तिहीन कर देगा। इसलिए आपने देखा भी होगा कि दुर्गा जी, काली जी या कोई भी देवी का हाथ उठाकर सिर्फ शक्ति देना और गायब हो जाना, ना कि फंस जाना।

तो हम सबके साथ सिम्पैथी और इम्पैथी जताकर उन्हें शक्तिहीन बना रहे हैं न कि शक्तिशाली। सभी के अपने कर्म हैं, सभी की अपनी सोच है, सभी की अपनी पवित्रता है, उसी के आधार से सभी शक्तिहीन और शक्तिशाली महसूस कर रहे हैं। इसलिए सबको समझाकर कि आपको ये करना पड़ेगा शक्तिशाली बनने के लिए, और न्याये हो जाओ। इसलिए शक्ति की पूजा की जाती है ताकि हमें याद आये कि आत्मा शक्तिशाली थी तो कोई दुःख-दर्द नहीं था, अब कमजोर है इसलिए शक्ति की आवश्यकता है।

! यह जीवन है !

बिना लक्ष्य के जीवन बिना पता लिखे लिफाफे जैसा है, जो कहीं नहीं पहुंच सकता।

इसलिए महान लक्ष्य बनायें और महान कर्म करें, तभी हम महान बन सकते हैं। क्योंकि कोई भी अच्छा परिवर्तन क्रोध या ताकत से नहीं आता। बोए पेड़ बबूल के और उम्मीद करें आम मिलने की, ऐसा संभव नहीं है।

इसलिए चाहे स्वयं को अच्छा बनना हो या किसी और को, प्रेम और स्नेह ही एकमात्र विधि है।



बैकुंठपुर-छ.ग. विधायक अम्बिका सिंधदेव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रेखा बहन तथा ब्र.कु. ममता बहन।



पुखराय-उ.प्र. विधायक विनोद कटियार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता दीदी।

आवश्यक सूचना

ग्लोबल अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर, ना.आबू में निम्नलिखित पदों पर सेवा(जॉब) हेतु आवश्यकता है

1. जनरल एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन - MS/DNB(Gen.Sur)
2. मेडिकल ऑफिसर, ब्लड बैंक - MBBS with one year experience in Blood Bank
3. नर्सिंग ट्यूटर - BSc(Nursing) with teaching experience
4. स्टाफ नर्स - BSc(Nursing)
5. लैब टेक्नीशियन - D.M.L.T.

उचित वेतन सुविधा, संपर्क करें - 9414374589
ई-मेल - ghrchrd@gmail.com



फरीदाबाद से.21 डी.-हरियाणा। पुलिस कमिश्नर एवं अन्य पुलिस स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. रंजना बहन तथा अन्य।



नवसारी-गुज. रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पी.एस.आई. सागर साहेब, पुलिस स्टाफ तथा ब्र.कु. मुकेश बहन।



इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। बी.एस.एफ. के असिस्टेंट कमाण्डेंट नरेश कुमार एवं जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. नीतू बहन, ब्र.कु. नारायण भाई व ब्र.कु. सागर भाई।



वडोदरा-मंगलवाड़ी(गुज.)। फायर सर्विस कंट्रोल रूम के फायर ऑफिसर मनोज भाई सितारपा व स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सुनीता बहन तथा ब्र.कु. वन्दना बहन।



अहम् या ईर्ष्या की समस्या ही है, जो मनुष्य की सम्पूर्णता में बाधक है। किसी को समाना या सभी को समाना आसान नहीं है, सभी को स्वीकार करना जैसे वो हैं, उसी रूप में इतना सहज नहीं है। स्वार्थ का अहम्, हमेशा अपने फायदे के लिए ही सोचना ही प्रमुख अहम् है। व्यक्ति सीमित है, सीमितता में ही सोचता है। उदाहरण, मकान दो सौ गज का हो तो भी व्यक्ति रहता दस बाई दस के कमरे में ही है, बाकी में उसका ईर्ष्या है, अहम् है, अहंकार है। जैसे ही व्यक्ति यह सोच लेता है कि मैं इतने का मालिक हूँ या यह मेरा दायरा है, उसी को बचाने के लिए

वह सभी के साथ स्वार्थपन वाला व्यवहार करता है। आपको दुःख हो, दर्द हो, परेशानी हो तो भी वही करेगा, क्योंकि उससे उसका दायरा, उसका अहम्, उसका ईगो सेटिस्फाई होता है। आप इसको प्रैक्टिकल कर लें, आपको इसका उत्तर मिल जायेगा। ओरा क्लीनिंग वाले कहते हैं या कलर थैरेपी वाले जब इसकी व्याख्या करते हैं, कहते हैं कि ईगो को, अहम् को, अभिमान को स्पेस के साथ या आकाश तत्व के साथ जोड़ा जाता है। इसको कैसे परखेंगे कि यह ईगो है? जैसे ही आप किसी को कोई काम बताओ और वो मना कर दे, तो उसी

कहते हैं बुढ़ापा आपकी जिन्दगी भर जीये गये अर्थात् पूरा जीवन आपने कैसा बिताया, उसका प्रतिरूप है। कई हमेशा फिट दिखते हैं, किसी की झुर्रियाँ जल्दी दिखाई दे जाती हैं। मनोविज्ञान कहता है, जब समय वैसा था, तो हमने उस समय तनाव पूर्ण जीवन बिताया। सहन ना करना या सहन करना, दोनों अहम्(ईगो) हमें ऐसी स्थिति में ले आते हैं।



ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

सोने, जागने की जगह
दो, दबाओ नहीं, जैसा
आप चाहते हैं वैसा हो,
सलिए सारी बीमारी ऐसे
उनको नियम बताओ कि
गो करने के लिए मजबूर

समय आपका मूड ऑफ हो जायेगा। अगर वो कार्य कर दे, आप खुश हो जायेंगे। ओरा क्लीनिंग वाले कहते हैं कि जिनको ईगो की समस्या है, जिनको

यह हो ही नहीं सकता। इसलिए सारी बीमारी ऐसे ही पैदा होती है। हाँ, आप उनको नियम बताओ कि ऐसा होता है, लेकिन फॉलो करने के लिए मजबूर

कितना अहम् है हम.... में...!

“ना” सुनने की आदत नहीं है, उनका गला, कान, नाक हमेशा ही खराब रहता, कुछ भी बोलेंगे तो गला रुंध जाता है, हमेशा गले में खरास बनी रहती, कफ बना रहता, लेज़ी बने रहते, लो फील करते हैं। ये सब उनका रिसर्च है और यह काफी हद तक सही भी है। वो कहते हैं कि यदि बीमारी सीज़नल है तो सिर्फ़ सीज़न में ही हो ना, लेकिन यह तो हमेशा ही होती रहती है। हम सभी किसलिए दवाइयों के आधार से चलने की कोशिश कर रहे हैं, अरे, बस समाना है, खुद को समझना है। उनका अगर सब कुछ खराब भी हो, तो भी वो वही खायेंगे जो उनको मना किया गया हो। इसलिए यदि आकाश तत्व ठीक हो जाए तो सबकुछ ठीक हो जाए। आप सभी को स्पेस दो, उसको रहने की, बोलने की, खाने, पीने,

नहीं कर सकते हैं। व्यक्ति जब इन सब चीजों में परेशान होगा, तो अपने आप ही ठीक हो जायेगा। पूरी दुनिया की सबसे बड़ी समस्या है, कि कोई मानता ही नहीं, दरअसल हम अलग हैं, तो वे भी अलग हैं, आप उन्हें प्यार से ही चला सकते हैं। राजा तो वही अच्छा है जो सभी को समझे। जिस दिन अहम् गया, उस दिन नई दुनिया, नया संसार बनने में टाइम नहीं लगेगा। एक बच्चा जिसको हम आग में हाथ डालने से मना करते हैं, अगर आप छोड़ दें या फिर धीरे-धीरे उसके हाथ को आग के पास ले जाएं तो गर्मी की महसूसता उसे दोबारा आग में हाथ डालने नहीं देगी। इसलिए अहम् को 'हम' या 'वी' फीलिंग में बदलें और जीवन की सुंदरता देखें, मजा ही आ जायेगा फिर...।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन
को बदल दें



प्रश्न : मेरा नाम राहुल है। मुझे समस्या ये है कि ऑफिस में जब भी कोई प्रॉब्लम होती है और तब मैं शांत रहता हूँ तो कस्टमर मेरे पास चिल्लाने लगते हैं। रोज़ ऐसा ही चलता रहता है और जब मैं उनसे कुछ बोलता हूँ गुस्से से तो वो शांत हो जाते हैं। तो मैं इस कन्फ्यूज़न में हूँ कि मेरा चुप रहना मेरे लिए हानिकारक साबित हो रहा है तो ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे बोल देना चाहिए?

उत्तर : आपको बोल देना चाहिए क्योंकि कई इस तरह की मेटालिटी के होते हैं। दूसरों को प्रेशर में लाना चाहते हैं अपनी बात मनवाने के लिए। या कुछ भी कारण हो, ऐसे में बोल देना ही अच्छा होता है।

प्रश्न : मेरा नाम गीता ओझा है। मेरा एक 22 साल का बच्चा है। उसके मन-मुताबिक पढ़ाई हमने करा दी है और आगे उसके करियर की शुरुआत अच्छी हो उसके लिए भी हम विंचित रहते हैं लेकिन वो गलत संगति में चला गया है। वो गलत संगति में न जाये, गलत आदतों में न पड़े, कैसे वो वहाँ से मुक्त हो, ये चिंता लगातार बनी रहती है, क्या उसके लिए विशेष अभ्यास किया जा सकता है?

उत्तर : आजकल युवक माँ-बाप की भावनाओं को नहीं समझते। और वो बहुत अच्छे होते भी स्लिप हो जाते हैं साथियों के संग में रहकर। इसीलिए हमें बुरे संग से बचना है। संग का बहुत ध्यान दो। अब ये गलत राह पर चले गए हैं तो आपको चिंता होना तो नैचुरल है। तो हम आपको एक-दो राय देना चाहेंगे। एक तो रोज अपने बच्चे को कोई एक टाइम फिक्स करके गुड वायब्रेशन दिया करें। चिंता से काम नहीं चलेगा। क्योंकि चिंता से मनुष्य के मन में निगेटिव संकल्प होते हैं। उससे निगेटिव वायब्रेशन जाते हैं। तो माँ अगर अपने बच्चे के लिए चिंतित है तो माँ से उसको निगेटिव एनर्जी मिलती रहती है। वो जिस गलत मार्ग पर चल रहा होता है, वो और चलता है। इसीलिए माताओं को चाहिए जिन्होंने राजयोग सीखा है, वो पहले तो अपने बच्चों को प्रभु अर्पण कर दें। ये सब तुम्हारे बच्चे हैं। तुम इनके जिम्मेदार हो। तुम्हीं इन्हें राह दिखाओ। मैं तो निमित्त इनकी माँ हूँ। असली मात-पिता तो तुम हो। रोज सवेरे एक टाइम फिक्स करके 6 बजे से पहले-

पहले, जिसकी विधि है स्वयं को एक विशेष संकल्प में स्थित कर दें। मैं पूर्वज हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ। तो हमसे जो वायब्रेन्स जायेंगे, वो कल्याणकारी जायेंगे। फिर योगयुक्त हो जायें, ऊपर से अपना कनेक्शन जोड़ लें। परमात्म शक्तियाँ और उसकी प्योर वायब्रेन्स मुझे आ रही हैं। फिर मुझ आत्मा से बच्चे की आत्मा को जा रही है। बहुत अच्छा इस तरह से फील करें कि मेरे वायब्रेन्स बच्चे की

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य



आत्मा को जा रहे हैं। 15 मिनट रोज करेंगे। और वायब्रेशन देने के बाद उन्हें गुड थॉट्स दे दें। तुम तो बहुत अच्छे हो, तुम तो हमारे कुल के दीपक हो। तुम तो हमारे कुल का नाम रोशन करोगे। तुम तो महान आत्मा हो, भगवान के बच्चे हो। तुम ऐसा काम करोगे जो सारा संसार तुम पर गर्व करेगा। इस बुरे संग को छोड़ दो। वापिस आ जाओ। बस ये विचार रोज देंगे कम से कम 21 दिन। तो बच्चा जब सोया हुआ है तो सब्कॉन्शियस माइंड जगा हुआ है। वो ग्रहण करेगा और उसके विचार बदलने लगेंगे। फिर उसे जागृति आयेगी कि अरे मुझे तो पढ़ना है। मुझे तो करियर सुन्दर बनाना है। मुझे तो ये अच्छा काम करना है। माताओं को अपने बच्चों को बहुत पवित्र भोजन खिलाना चाहिए, ये उनकी बड़ी ज़िम्मेदारी है। पानी को भी चार्ज करें, दूध को भी चार्ज करें, जूस को भी चार्ज करें। विशेषकर भोजन को। परमात्मा का आह्वान करके, उनसे योग लगाकर मैं परमपवित्र आत्मा हूँ, उनको याद करते हुए पवित्र भोजन बनायें और संकल्प कर दें कि इस भोजन को खाने से इसकी बुद्धि पवित्र हो जाये। बस ये दो प्रयोग करने से 21 दिन में ही आपका बच्चा सही राह पर आ जायेगा और आपके सपनों को पूर्ण करेगा।

Contact e-mail - bksurva8@yahoo.com



सोनीपत-हरियाणा। विधायक सुरेन्द्र पवार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विनोद दीदी।



गिदड़बाहा-पंजाब। नगर कौंसिल मैनेजमेंट कमेटी के मेम्बर्स को राखी का संदेश देने के पश्चात् एस.डी.एम. ओम प्रकाश जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.क. शीला बहन।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल



मनसा सेवा के खेल को समझते हैं!

मनसा सेवा हर कोई करना चाहता है, लेकिन इसकी गहराई पर विचार करके कि मनसा सेवा की क्या-क्या काबिलियत हो सकती है, उसके आधार से ही उसमें पैनापन आयेगा। अपने को भी फायदा होगा, दूसरों को भी फायदा होगा। यह सेवा स्वयं की है, संसार स्वयं से है, न कि संसार से हम हैं, हमसे संसार है। इसलिए संसार के हर एक प्राणी को हम स्वयं समझकर, हम अपने आप पर काम करेंगे तो काबिलियत निश्चित रूप से बढ़ेगी। हम अगर किसी को जगाते हैं तो हम ध्यान रखते हैं कि उठने के बाद इसको अच्छा लगे, तो उसको सर पर सहलाते हुए उसे जगाते हैं, तो जब वो आँख खोलता है तो उसे कितना अच्छा लगता है। ऐसे ही हमें उठाना जरूर है सबको लेकिन बड़े आराम से, बड़ी शांति से, और वो होगा खुद पर काम करने के बाद। तो मन के मैलेपन को खत्म करना ही मनसा सेवा करना है।

हुए या पड़े हुए ही चलते हैं। जो हमने देखा था, साठ प्रतिशत भी वह सही नहीं था, जो सुना वो भी ऐसा ही सुना, जो पढ़ा वो भी ऐसा ही कुछ था। तो आप सोचें, जिसके मन में इतनी सारी बातें हैं, वह कैसे कर सकता है मनसा सेवा! जिसने सिर्फ अपने बारे में ही सोचा है, परमात्मा उसे बुद्धि दे रहे हैं, विशाल बुद्धि बना रहे हैं, तो भी वह वही सोच रहा है जिससे वह नीचे जा रहा है।

दरअसल परमात्मा हमारे मन की सफाई

है। इसलिए मनसा सकाश देने के लिए पहले शुभ भावना, शुभ कामना से अपने प्रति शक्तिशाली संकल्पों में जीना शुरू करना है। बुद्धि को विशाल बनाना है, सारा संसार हम जैसा सोचते हैं वैसा ही सोचेगा तब... जब हम निःस्वार्थ, निरसंकल्प स्थिति के साथ जियेंगे। इसलिए एक बार चिंतन करने का यह विषय है कि जब आप किसी चीज के लिए बैठें तो सिर्फ शुद्ध संकल्पों में, श्रेष्ठ संकल्पों में बैठें। अपने आप को पावरफुल बनाते जाएं।

कोई भी खेल दो प्रतिद्वंदियों के बीच में ही खेला जाता है, लेकिन सिर्फ और सिर्फ कॉम्पीटिशन ही नहीं है, बल्कि खेल में महारत हासिल करने का एक जरिया भी होता है। आपकी सूझबूझ आपकी उसमें जीत दिलाती है। उसी ढर्रे पर परमात्मा ने हमें मन का खेल सिखाया, नाम दिया... मनसा सेवा!



मन सा कोई नहीं, अर्थात् मन जैसा कोई नहीं है। जो है तो बहुत खूब, बहुत अच्छा, लेकिन अगर थोड़ा भी दर्द आया तो उबरने में भी उतना ही समय लेता है। आत्मा ही मन है, जब वो सोच रही है, चित्र ला रही है, चरित्र ला रही है, बातें ला रही है। कहा भी जाता है, जैसी सोच वैसी ऊर्जा हमारे अंदर प्रवाहित होती रहती है। लाजमी सी बात है, दिन भर की दिनचर्या में क्या कुछ हम सोचते हैं, वह फैलता भी है। घर के अनपढ़ और गंवार लोग भी कह देते हैं, क्या सोच रहा है, वातावरण भारी मत करो, माहौल भारी-भारी सा लग रहा है। ये क्या है, हमारी तरंगें ही तो हैं ना जो हर पल फैल रही हैं। तो जो मन में विचारों का खेल चल रहा है, उसे सब लोग दर्शक बन कर हर पल देख रहे हैं और उस पर निर्णय भी दे रहे हैं। परमात्मा इतने सक्षम हैं, सब कुछ कर सकते हैं, फिर भी वह हमसे यह खेल खेलने के लिए क्यों कहते हैं, ताकि हमें भी समझ आ जाये कि हम कैसे व किस भाव से लोगों के बीच रहते हैं। आपका हर पल किया गया संकल्प लोगों के जीवन के साथ जुड़ता ही है, संकल्प ज़्यादातर देखे हुए, सुने

के लिए, मनसा सेवा करवा रहे हैं। मन में जब थोड़ा भी मैल है, चाहे वह किसी भी बात को लेकर है, वह व्यक्ति कहीं से भी वैसे ही वायब्रेशन देगा, जो वो है। इसलिए मन को परमात्मा जैसा बनाने के लिए मनसा सेवा की बात कर रहे हैं। इसलिए मनसा सेवा एक कार्य नहीं है, एक स्थिति है जो परमात्मा जैसा ही हमें रहने के लिए बाध्य करती है। जो उसके जैसा सोच सकता है, जो उसके जैसा बोल सकता है, जो उसके जैसा व्यवहार कर सकता है, उससे नैचुरल सेवा होती है।

तो इसलिए अगर हम थोड़ा भी किसी के प्रति दुर्भावना या किसी एक के लिए सद्भावना रखते हैं तो हम अयोग्य हैं। क्योंकि मनसा सेवा में थोड़ा भी दाग हमारे मन के संकल्पों को वैसा ही बनाने की कोशिश करता

आपकी खुशबू, आपकी सुगंध आपके व्यवहार द्वारा चारों तरफ फैलती जायेगी।

इसलिए मनसा सेवा मनुष्य की वो स्थिति है जिसमें उसका इंटरेंशन पता चलता है, आशय पता चलता है, उसका भाव पता चलता है कि क्यों हम करें मनसा सेवा। क्या प्राप्ति होगी। सबने बुद्धि में ये बिठा लिया है कि इससे हम आत्माओं को जगा रहे हैं, उस स्थान को शुद्ध बना रहे हैं। लेकिन आपको पता हो कि जगाने वाला पहले खुद जगा हुआ होना चाहिए अपने एक-एक संकल्पों के प्रति, अपनी एक-एक भावनाओं के प्रति। मनसा सेवा परमात्मा के जैसा मन बनाने की प्रक्रिया है, इसमें शामिल होना माना एक छोटा-सा भी दाग आपको परेशान ना करे, तब जाकर आप मनसा सेवा के थोड़े से नजदीक पहुंचेंगे।



अमरावती-महा। सांसद श्रीमति नवनीत कौर राणा व बडनेरा मतदार संघ के विधायक रवि राणा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता दीदी तथा ब्र.कु. भारती बहन।



फरीदाबाद से.19-हरियाणा। विधायक नरेन्द्र गुप्ता, ओल्ड फरीदाबाद को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. हरीश बहन तथा ब्र.कु. ज्योति बहन।



अरेराज धाम-बिहार। दादी प्रकाशमणि जी के 14वें पुण्य स्मृति समारोह में दादी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि देते हुए विधायक सुनीलमणि तिवारी। साथ हैं ब्र.कु. मीणा दीदी।



कुरुक्षेत्र-दारा खेड़ा(हरियाणा)। सेशन जज अजय कुमार शारदा को रक्षासूत्र बांधने व ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. मधु बहन तथा ब्र.कु. मीनाक्षी बहन।



समस्तीपुर-बिहार। विश्व बंधुत्व दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अपनी शब्दांजलि प्रकट करते हुए दशरथ मिश्र, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, समस्तीपुर। मंच पर उपस्थित हैं डी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, इंडियन डेयरी एसोसिएशन बिहार स्टेट चैप्टर सह एम.डी., सुधा डेयरी, समस्तीपुर, ब्र.कु. सविता बहन तथा ब्र.कु. कृष्ण भाई।



चन्द्रपुर-महा। कलेक्टर अजय गुल्हाने को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ब्लेसिंग कार्ड भेंट करते हुए ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. प्रसाद भाई तथा अन्य।



कटनी-सिविल लाइन(म.प्र.)। एस.डी.एम. बलबीर रमण जी को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी।



अकलतरा-छ.ग। रक्षाबंधन पर्व पर राखी बांधने के पश्चात् उपस्थित हैं भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष रजनी साहु, थाना प्रभारी मनीष सिंह परिहार, ब्र.कु. भुवनेश्वरी बहन तथा अन्य।



सारंगपुर-म.प्र। स्थानीय सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व विधायक गौतम टेटवाल, लार्जस क्लब अध्यक्ष रूपा बारकिया, राज्य कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष धर्मेन्द्र वर्मा, रिटा. शिक्षक भैरू लाल राठौर, विजय बारकिया, स्वास्थ्य विभाग में पदस्थ गोकुल जी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी बहन तथा ब्र.कु. प्रीति बहन।



आस्का-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा बार एसोसिएशन में रक्षाबंधन कार्यक्रम के दौरान रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करते हुए ब्र.कु. प्रवाती बहन। इस मौके पर वाइस प्रेसीडेंट शिव शंकर पात्र, सोनियर एडवोकेट रवि पात्र, एडिशनल पब्लिक प्रोसिक्यूटर सुधांशु पण्डा तथा अन्य मेम्बर्स उपस्थित रहे।

सूर्य नगर-तारों की कुट(राज.)। सेवाकेन्द्र पर आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व समाज सेवी महेश पारीख, प्रो. बनवारी लाल गुप्ता, राजस्थान हाई कोर्ट के एडवोकेट श्याम प्रकाश शर्मा, राजापार्क सबजोन से ब्र.कु. पूजा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जया बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



दिव्य... अलौकिक समर्पण समारोह

● विश्व कल्याणार्थ आजीवन समर्पण समारोह सम्पन्न ●

सप्तम् शिव कन्याओं का जीवन शिव सेवा समर्पणम्...



छतरपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा दिव्य कन्याओं के भव्य अलौकिक समर्पण समारोह में सभी कन्याओं के माता-पिता एवं सगे-सम्बन्धियों ने अपनी बच्चियों को परमपिता परमात्मा को समर्पित किया एवं राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश बहन के हाथ में हाथ देकर कन्यादान किया। स्थानीय सेवाकेन्द्र की सात

कन्याओं ने परमपिता परमात्मा को जीवनसाथी के रूप में स्वीकार करते हुए अलौकिक रीति-रिवाज के साथ विश्व कल्याण अर्थ अपना जीवन समर्पित किया। समर्पित होने वाली कन्याओं ने अपने जीवन के दिव्य अनुभवों को साझा किया और परमात्मा के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया

व शिव परमात्मा को साक्षी मान प्रति सात वचन दृढ़ संकल्प के

क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने आशीर्वाचन देते हुए समर्पण का अर्थ समझाया। उन्होंने बताया कि जीवन में चार बातों की जरूरत होती है पवित्रता, त्याग, तपस्या और सेवा। चारों बातों को विस्तार से समझाते हुए बताया कि इन्हें अपने जीवन में धारण कर अपना जीवन सफल बनाया जा सकता है।

स्व कल्याण एवं विश्व कल्याण रूप में छतरपुर सेवाकेन्द्र

संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन द्वारा संकल्पित कराया गया। पंडित प्रेम नारायण त्रिपाठी ने विधि-विधान से मंत्रोच्चार का वाचन कर अलौकिक विवाह सम्पन्न कराया। मुख्य अतिथि के रूप में विधायक नीरज दीक्षित, विशिष्ट अतिथि अलीगढ़ के ब्र.कु. सत्यप्रकाश एवं टीकमगढ़ के एडवोकेट रघुवीर चौबे सहित

अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। विधायक दीक्षित जी ने समर्पित कन्याओं और उनके माता-पिता को नमन करते हुए उनका सम्मान किया। आगरा, टीकमगढ़, सागर, सतना, अलीगढ़, खजुराहो व नौगांव से आई ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी अपने विचार रखे। संचालन ब्र.कु. कल्पना बहन ने किया।

श्रीकृष्ण की सृष्टि में जाने का है पुरुषार्थ भावी पीढ़ी के वास्तुकार हैं शिक्षक



नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के दिव्य संस्कार भवन सेवाकेन्द्र द्वारा जन्माष्टमी महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। छोटे-छोटे बच्चों ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रम गीत, नृत्य एवं कविताओं के साथ श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं को बड़े ही मनमोहक रूप से प्रस्तुत किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. कुसुम बहन ने कहा कि जब सम्पूर्ण आत्मायें पवित्र और योगी बन जाती हैं तभी इस सृष्टि पर दैवी राजकुमार श्री कृष्ण और दैवी राजकुमारी श्री राधा का जन्म होता है

और इसी जन्म के यादगार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व के रूप में मनाते हैं। हम सभी उस पावन सृष्टि में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं जहाँ सभी राधा-कृष्ण की तरह पवित्र, सतोप्रधान और सोलह कला सम्पूर्ण होंगे। हम भी जाकर यह भविष्य प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव राजेश सक्सेना ने कहा कि मेरे लिए यह सौभाग्य का विषय है कि मैं इस स्थान पर आ सका हूँ, यह परमात्मा शिव की कृपा के बिना संभव नहीं है। यहाँ दीदी के सानिध्य में निश्चित रूप से हम सभी शांति, सुख और आनंद के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे और एक बेहतर इंसान के रूप में, एक बेहतर मानव के रूप में अपनी और अपने देश की सेवा कर सकेंगे। श्रीकृष्ण और उनका मकखन इस बात का प्रतीक है कि हम सदैव पवित्रता का व्रत धारण करें और धन-धान्य से फलीभूत रहें। उन्होंने सभी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनायें देते हुए कार्यक्रम में उन्हें आमंत्रित किये जाने के लिए आभार व्यक्त किया।

धमतरी-छ.ग.। शिक्षक दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेन्द्र में 'शिक्षक भावी पीढ़ी के वास्तुकार' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में सुरेश देशमुख, साहित्यकार एवं पूर्व प्रोफेसर, पी.जी.



कॉलेज धमतरी, बहन मनदीप खालसा, प्रोफेसर, पी.जी. कॉलेज धमतरी, कामिनी कौशिक, साहित्यकार, शिक्षक, ब्र.कु. सरिता दीदी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। बहन मनदीप खालसा ने कहा कि जिनसे भी हमें कुछ सीखने को मिलता है वे सभी हमारे गुरु हैं। ज्ञान से बड़ा कोई दान नहीं है और गुरु से बड़ा कोई दानी नहीं। कोरोनाकाल में भी शिक्षकों की भूमिका बच्चों के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण रही है। सुरेश देशमुख ने अपने बचपन के शिक्षकों को और उनके द्वारा मिली शिक्षाओं को याद किया जो बहुत ही प्रेरणादायक थे। ब्र.कु. सरिता दीदी ने कहा कि हम सबका परम शिक्षक परमात्मा है जिन्होंने सबके अंदर कोई न कोई विशेषता भरी है, गुण दिया है। शिक्षक ही भावी पीढ़ी के वास्तुकार हैं, शिल्पकार हैं, जिनकी स्मृति में निर्माण ही रहता है। कार्यक्रम का संचालन कामिनी कौशिक ने किया।

ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर रक्तदान शिविर का आयोजन

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। दादी प्रकाशमणि महान व्यक्तित्व की धनी थीं। उन्होंने त्याग, तपस्या व सेवा के बल से समूचे विश्व में भारतीय संस्कृति को जीवित रखा। उक्त विचार स्थानीय सेवाकेन्द्र में ब्रह्माकुमारीज एवं हिन्दुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स द्वारा आयोजित 'रक्तदान शिविर' में जयहिंद मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश कौशिक ने दादी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने रक्तदाताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि रक्तदान जीवन दान है, किसी के जीवन को बचाना बहुत बड़ी सेवा है। हरियाणा योग आयोग के रजिस्ट्रार हरीशचंद्र

आर्य ने कहा कि हिन्दुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स द्वारा रक्तदान शिविरों का शतक काबिले तारीफ है। जैसे दादी प्रकाशमणि ने विश्व बंधुत्व का पाठ पढ़ाया, उन्हीं के पद चिन्हों पर चलकर हमें समाज को एकजुटता में बांधे



रखना है। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन ने कहा कि दादी जी ने सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया जिसके बल पर ही हम समाज को आध्यात्मिक, नैतिक व मानवीय मूल्यों में बांध दिव्य बना

सकते हैं, तभी हमारा भारत देश पुनः विश्व गुरु कहलायेगा। गृह मंत्रालय नई दिल्ली की निदेशक बहन चित्रलेखा ने इस अवसर पर कहा कि रक्त एक ऐसी चीज है जो लेबोरेटरी में नहीं बनती। हिन्दुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स के जिला मीडिया प्रभारी बिशन सिंह आर्य ने कहा कि रक्तदान युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है। मौके पर अशोक शर्मा, चैयरमैन, शिक्षण संस्थान, सुरेन्द्र आर्य चंदैनी, अशोक थालौर, समाजसेवी, सतवीर शर्मा आदि उपस्थित रहे तथा रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ब्रह्माकुमारीज एवं हिन्दुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स द्वारा आयोजित 'रक्तदान शिविर'

शिविर में 43 लोगों ने किया रक्तदान

भारत सरकार में जीएसटी टैक्सेशन अधिकारी प्रमोद श्योराण की उपस्थिति में सेवाकेन्द्र पर हुआ वृक्षारोपण